रात के 11 बजे के बाद

उपन्यास

राजेश माहेश्वरी

नारी ईश्वर की इस सृष्टि की संचालन कर्ता भी है और इसकी गतिशीलता का आधार भी। नारी से मेरा तात्पर्य जीव-जन्तु पेड़-पौधों में उपस्थित नारी तत्व से भी है। मानव के संदर्भ में जब हम नारी को देखते हैं तो उसके दोनों रुप हमारे सामने आते हैं एक सृजनकर्ता के रुप में और दूसरा संहारक के रुप में। उसका सृजनात्मक स्वरुप मानवीय सभ्यता और संस्कृति के विकास में दिखलाई देता है तो उसके संहारक स्वरुप ने अनेक युद्‍ध भी कराये हैं और विकृतियां व वीभत्सता भी दी है। आज समाज में जितने अपराध हो रहे हैं उनमें भी उसकी बराबर की भूमिका देखने को मिलती है।

सामाजिक जीवन में नारी के इन्हीं दो रुपों को चित्रित करने के लिये मैंने दो पात्रों की कल्पना की और ये दो नारी पात्र नारी के दो रुपों को दर्शाते हैं। इसमें मुझे कहां तक सफलता मिली है यह तो पाठक ही निर्धारित करेंगे। इसकी रचना में श्री अभय तिवारी से हुआ मेरा विचार विमर्श महत्वपूर्ण रहा है और कथा क्रम को सुगठित आकार देने में सहायक रहा।

मेरा यह प्रयास समर्पित है उस वन्दनीय नारी समाज को जो समाज की गतिशीलता की धुरी है।

राजेश माहेश्वरी
106, नयागाँव हाउसिंग सोसायटी
जबलपुर, म. प्र. 482002

राकेश और गौरव गहन सदमे की स्थिति में थे उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि उनका मित्र आनंद अब इस दुनिया में नहीं हैं। राकेश ने गौरव से कहा कि मानव जीवन बहुमूल्य होता है क्योंकि यही हमारी सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों को बनाता है। हमारा जीवन और मृत्यु प्रभु के हाथों में है हम किसी पटकथा के नाटक के पात्र के रूप में आते हैं अपना पात्र निभाकर एक दिन अनंत में विलीन हो जाते है इसी में सुख दुख निहित है। मेरा मन मान नहीं रहा है कि हमारा मित्र आनंद हमसे बिछुड़ गया है। मैं मानता हूँ कि इस दुनिया में जिसका जन्म हुआ है उसकी एक दिन मृत्यु होकर वह अनंत में विलीन हो जाता है परंतु आनंद की अकस्मात् मृत्यु ने मुझे अंदर तक हिला दिया है। मुझे कितनी आंतरिक वेदना है मैं तुम्हें शब्दों में नहीं बता सकता हूँ।

गौरव बोला मैं तुम्हारी भावनाओं को समझ सकता हूँ। आनंद मेरा सबसे प्रिय मित्र ही नहीं मेरे परिवार के सदस्य के समान था, हम अपनी कठिनाईयों का एक दूसरे से वार्तालाप करके उनका निदान करते थे। उसके नहीं रहने से मैं जीवन में एकदम अकेला रह गया हूँ। मेरे यह समझ में अभी तक नहीं आ रहा है कि वह बुद्धिमान, व्यवहारिक एवं निड़र व्यक्ति था उसने ऐसा क्यों किया ? इसके बाद वे आनंद के घर जाने के लिये कार में रवाना हो गये। वहाँ पहुँच कर उन्हे बताया गया कि आनंद के परिवारजनों को इस दुखद घटना की सूचना दे दी गई है और वे सभी प्रातः काल तक यहाँ पहुँच जायेंगे। उन्हें यह भी बताया गया कि डॉक्टर ने जाँच करके हृदयाघात से स्वाभाविक मृत्यु का होना बताया है। दोनो कुछ देर वहाँ रूकने के पश्चात वापस घर चले गये। रास्ते में राकेश के ड्राइवर मोहन ने बताया कि साहब मैंने आनंद साहब की मृत्यु के संबंध में उनके ड्राइवर हरीश एवं उनके नौकर रामसिंह से अजीब बातें सुनी है। राकेश ने उससे पूछा कि क्या बातें सुनी है ? वह बोला कि कुछ लोग कहते हैं कि आनंद ने आत्महत्या करके अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली परंतु कुछ लोगों का कहना है कि यह उसकी स्वाभाविक मृत्यु है और कुछ लोगों का मत है कि उनकी मृत्यु के पीछे कोई साजिश है। यह सुनते ही गौरव ने राकेश की ओर देखा और आश्चर्यचकित होकर कहा कि यह क्या कह रहा है ? हमें इसकी बातों की सच्चाई तक जाना चाहिये। यह सुनते ही वे तुरंत अपनी गाडी आनंद के घर की ओर लौटाते है।

आनंद अकेला ही रहता था उसके दोनो बेटे दुबई में रहते थे एवं पत्नी बैंकाक में अपने माता पिता के पास रहती थी। राकेश ने गौरव से कहा कि हम अपने मित्र की मृत्यु के विषय में पूरी जानकारी

मालूम करें तभी हम किसी निर्णय पर पहुँच सकेंगे। हमें उस चिकित्सक से मिलना चाहिये जो कि उस रात आनंद को देखने आया था। हमें उससे काफी जानकारियाँ मिल सकती है। राकेश आनंद के ड्राइवर और उसके नौकर से पूछताछ करता है। उस नौकर ने बताया कि साहब डाक्टर के आने के पहले ही साहब ने आत्महत्या कर ली है इसकी सूचना फोन के द्वारा दी गयी थी यह फोन पी बी एक्स के नंबर से किया गया था रात में आठ बजे के बाद साहब का पी बी एक्स आपरेटर चला जाता है तब रात में दस बजे किसने फोन किया यह किसी को नहीं मालूम। रात में आपरेटर के जाने के बाद पी बी एक्स के कमरे का दरवाजा ताला लगाकर बंद करके दरबान चाबी अपने पास रखता था उस रात भी चाबी उसी के पास थी और किसी ने भी उससे चाबी नहीं माँगी तब किसने डुप्लीकेट चाबी से ताला खोल कर चुपचाप फोन किया यह रहस्य बना हुआ है। रमेश नाम का नौकर जब रात में दूध लेकर साहब के पास गया तो उसने साहब को कुर्सी पर अचेत अवस्था में देखा उसने एक दो बार साहब जी करके पुकारा परंतु उसे कोइ्र जवाब नहीं मिला तब उसने घबराकर तुरंत ही उनके डाक्टर को फोन किया और डाक्टर के यहाँ से जवाब मिला की वो विदेश गये हुये हैं तभी थोडी देर बाद दूसरा डॉक्टर वहाँ पहुँच गया। रवि नाम का नौकर उनका बैग लेकर उनके साथ ऊपर आया और उन्होने जाँच करके तुरंत ही बात दिया कि अब वे इस संसार में नहीं है और हृदयाघात के कारण उनकी मृत्यु हो गयी है। हम सभी लोग स्तब्ध रह गये डाक्टर भी वहाँ पर बिना रूके नीचे उतर कर अपनी गाडी में वापस चला गया। उस समय रात के ग्यारह बजने को थे परंतु उनकी मृत्यु हो गयी है इसकी सूचना साढ़े दस बजे रात में किसके द्वारा दी गयी यह एक आश्चर्यजनक बात है। राकेश को भी

ध्यान आया कि उसके नौकर को पौने ग्यारह के लगभग इस दुखद घटना कि जानकारी फोन पर प्राप्त हुयी थी और वह भागता हुआ मेरे पास आया और बोला कि आनंद साहब अब नहीं रहे।

राकेश और नौकर के बीच बातचीत चल रही थी तभी आनंद के ड्राइवर ने एक और आश्चर्यजनक बात बतायी कि सवा दस बजे के लगभग उसने साहब को चुपचाप पीछे की ओर से घर के बाहर जाते हुये देखा। लगभग उसी समय डॉक्टर भी उनको देखकर कार में वापिस जा रहा था तब तक यह सबको पता हो चुका था कि साहब दुनिया में नहीं रहे मैं तुरंत दौडकर लिफ्ट से उनके कमरे में पहुँचा और यह देखकर स्तब्ध रह गया कि साहब का मृत शरीर जमीन पर पडा हुआ था और सभी नौकर फूट फूटकर रो रहे थे। मेरा तो दिमाग यह सोचकर चकरा गया कि वह कौन था जो कि दीवार फांदकर बाहर चला गया था। मैंने उस समय चुप रहना ही उचित समझा परंतु मैने यह बात साहब के सबसे पुराने और वफादार नौकर रमेश को बताई, हम लोगों ने आपस में विचार विमर्श करके निर्णय लिया कि आपको और गौरव जी को इन बातों से अवगत कराया जाये क्योंकि आप दोनों ही उनके सबसे निकटतम मित्र रहे हैं। यह सब सुनकर राकेश बोला आखिर यह क्या माजरा है? हम दोनो ने रवि से जानना चाहा जो डॉक्टर आया था वह कौन है, उसका फोन नं. क्या है हमें उससे अभी बात करना है। उन्हें कोई भी यह जानकारी नहीं दे पा रहा था कि वह डॉक्टर कौन था किसके कहने पर आया था और इतनी जल्दर क्यों वापस चला गया। अब गौरव अपने परिचित डॉक्टर को तुरंत बुलाता है वह आकर जाँच करके मृत्यु हो जाना तो बताता है परंतु इसके कारण के विषय में वह कहता है कि बिना पोस्टमार्टम रिर्पोट

के कुछ भी नहीं कहा जा सकता है पोस्टमार्टम कराने के लिय आपको पुलिस को सूचित करना पडेगा तभी यह संभव हो सकेगा।

गौरव राकेश को बताता है कि मैनें एक बात तुमसे नहीं बतायी है क्योंकि आनंद ने मुझे किसी को भी यह बात बताने से रोका था परंतु अब वह इस दुनिया में नहीं है इसलिये ये महत्वपूर्ण बात मैं तुम्हें बता रहा हूँ। राकेश ने पूछा ऐसी क्या बात है ? तब आनंद ने बताया कि कल शाम को आनंद मेरे घर पर आया था और काफी देर तक रहा। वह काफी निराश एवं उसके चेहरे पर घबराहट के भाव थे मैंने उससे काफी पूछने का प्रयास किया कि क्या बात है और मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ। तुम कहो तो राकेश को भी यहाँ बुला लेते है उसने कहा कि यह मामला उसे खुद ही निपटाना होगा आप लोग मेरे साथ है यही मेरे लिये बहुत बड़ा संबल है। तभी अचानक किसी का फोन उसके मोबाइल पर आया और वह तुरंत उठकर चल दिया। वह अपनी वसीयत के संबंध में मुझसे बात करना चाह रहा था परंतु बीच में फोन आ जाने के कारण बात अधूरी रह गई। राकेश ने पूछा कि उसका ड्राइवर भी साथ में था क्या ? गौरव ने कहा, नहीं वह खुद ही कार चला रहा था।

यह सुनकर राकेश बोला कि यह मामला अत्याधिक संदिग्ध है इसकी सच्चाई पता करने हेतु इस मामले में पुलिस का सहयोग लेना चाहिये। इसके बाद राकेश और गौरव वापस अपने अपने घर लौट जाते हैं। दूसरे दिन सुबह ही वे आनंद के परिवारवालों को सारी बात बताकर उनसे पुलिस में मामला दर्ज करने के लिये कहते हैं। उसके परिवारजन सारी बातें ध्यानपूर्वक सुनते हैं और आश्चर्यचकित हो जाते हैं। उनका सोचना था कि पुलिस में मामला जाने से परिवार की निजी बातें उभरेंगी जिससे परिवारिक प्रतिष्ठा को आघात पहुँच सकता है। वे

राकेश से कहते हैं कि आपकी और उनकी मित्रता बहुत गहरी थी इसलिये आपका ऐसा सोचना काफी हद तक सही है। उसके बेटों ने कहा कि पापा तो अब दुर्भाग्यवश रहे नहीं अब इस जाँच पड़ताल से क्या फायदा ? राकेश ने कहा कि हमारा फर्ज बनता था कि आपको इन तथ्यों कि जानकारी दे देवें।

इतना कहकर राकेश वापस अपने घर की ओर रवाना हो जाता हैं। वह सोच रहा था कि विधि की कैसी विडंबना है कि आनंद की अकाल मृत्यु हो गई। वह जानता था कि आनंद बुद्धिमान, साहसी एवं समयानुकूल निर्णय लेने में सक्षम था। यदि उसकी मौत स्वाभाविक थी तो उसकी आत्महत्या का फोन आने का क्या औचित्य है इसकी गहराई की तह में जाना चाहिये यदि उसके परिवारजन रूचि नहीं लेते तो उसे इस मामले को पुलिस में ले जाना चाहिये, यह मेरा नैतिक कर्तव्य बनता है। वह गौरव से उसकी राय माँगता है। गौरव कहता है कि जब उसके परिवारजनों को जाँच में रूचि नहीं है तो अपने को बीच में नहीं पड़ना चाहिये। इतना वार्तालाप होते होते राकेश का घर आ जाता है। वह गौरव से कहता है कि इस विषय पर तुम पुनः विचार करना।

उसके घर पहुँचन के कुछ समय बाद ही आनंद की पत्नी रेखा का फोन आता है कि भाईसाहब मैं आपके विचारों से सहमत हूँ आप तुरंत आ जाये मैं अभी पुलिस थाने जाकर इस मामले की रिपोर्ट दर्ज कराना चाहती हूँ। हमें वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों से मिलकर इसे मामले की जाँच के लिये उनसे अनुरोध करना चाहिये। राकेश आनंद के घर पहुँचता है, वहाँ उसके परिवारजन बताते हैं कि उन्होने गंभीरतापूर्वक पुनः विचार किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इस बात की सच्चाई मालूम होनी ही चाहिये कि यह सामान्य मृत्यु,

आत्महत्या या हत्या है। वे सभी पुलिस थाने जाकर रिपोर्ट दर्ज करा देते हैं इसकी जानकारी तुरंत ही थाने से वरिष्ठ अधिकारियों और पत्रकारों को हो जाती है, और इसके बाद विस्तृत जाँच प्रक्रिया प्रारंभ कर दी जाती है और आनंद के शव को पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया जाता है। गौरव उसके साथ जाता है।

रास्ते में गौरव के मोबाइल की घंटी बज रही थी उसने फोन उठाकर कहा हेलो। दूसरी तरफ से पल्लवी फोन पर थी वह बोली गौरव जी आप कैसे हैं। अरे तुम, कैसे फोन किया, क्या वापस आ गई हो। नही, मैं अपने हनीमून पर गोवा मैं ही हूँ, मुझे किसी का फोन आया था कि पुलिस ने आनंद की मृत्यु की जांच शुरू कर दी है। यह अच्छा हुआ कि हम दोनो तो हनीमून पर यहाँ आ गये अन्यथा हमसे भी पुलिस पूछताछ करती। हाँ, यह बात तो है, मुझसे भी जानकारी ली जायेगी मैं असमंजस में हूँ कि किन बातों को कितना बताऊँ ? आप तो उनके सलाहकार है और सबकुछ आपके कहने से ही होता रहा है। अच्छा यह बातें छोडिये और ये बताइये कि आनंद की आखरी वसीयत क्या आप के पास है ? आप उसकी मृत्यु के दो घंटे पहले आनंद के बुलाने पर उसके पास गये थे। नही, मैं नहीं गया था ना ही मुझे बुलाया गया था। फोन पर खिलखिलाहट की आवाज आयी, मेरी जानकारी बिल्कुल पक्की है कि आप उस रात आनंद से मिलने गये थे। यह तुम कैसे कह सकती हो ? मैं भी क्यों बताऊँ ? आप मुद्दे की बात बताइये ना क्या वसीयत आपके पास है ? सिर्फ हाँ या ना मैं कह दो। तुम्हें तो मालूम है मुझे इसकी जानकारी है कि तुम्हारी सलाह के बाद ही आनंद ने अपनी पहली वसीयत रद्द कर दी थी। मुझे इस विषय में कोई जानकारी नहीं है तुम राकेश से पूछो। राकेश एक मंजा हुआ व्यक्ति है उसके पेट से

बात निकालना आसान नहीं है। आप से मेरी मित्रता भी रही है क्या आप मेरी मदद नहीं करेंगे। गौरव पल्लवी के इस वार्तालाप से काफी सचेत हो गया था। वह बोला इन बातों को छोडो, ये बताओ तुम वापस कब आ रही हो। पल्लवी बोली मुझे आनंद की मृत्यु का बहुत दुख है वह बहुत भला, मददगार एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व का धनी होने के साथ साथ मेरा सबसे करीबी मित्र था। अब उसके नहीं रहने का अभाव मुझे जीवन पर्यंत रहेगा। आनंद के द्वारा कोई भी वसीयत रजिस्टर्ड नहीं करायी गयी है यह तुम्हारे अलावा और कही नहीं हो सकती है। अच्छा अब मैं फोन रखती हूँ आपसे बाद में बात करूंगी। इस फोन के आने से गौरव का माथा ठनक गया कि इसको इतनी जानकारी कैसे हो गयी। ये मामला अब उलझता ही जा रहा है और मुझे बेवजह पुलिस की जाँच पडताल में परेशान होना पडेगा। मन ही मन गौरव काफी घबरा रहा था और सोच रहा था यदि ये हत्या का मामला है तो कहीं मैं शक के दायरे में आकर बेवजह उलझ ना जाऊँ। यहाँ पर रहने से अच्छा तो मैं कुछ समय के लिये अपने बेटे के पास अमेरिका चला जाऊँ।

पल्लवी और गौरव की बातों को पल्लवी का पति रिजवी बहुत ध्यान से सुन रहा था। वह बोला कि पुलिस ने अपनी जाँच प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है। हमसे भी वापिस पहुँचने पर काफी पूछताछ हो सकती है विशेष्ा रूप से तुमसे क्योंकि तुम आनंद नजदीकी महिला मित्र रही हो। तुम उसके साथ कई बार बाहर भी गयी हो और उसने तुम्हे आर्थिक रूप से सक्षम बनाने हेतु बहुत कुछ किया था। पल्लवी ने कहा कि हाँ यह बात तो ठीक है कि मुझसे काफी गंभीरता से पूछताछ हो सकती है परंतु मुझे कोई डर नहीं है मै जो भी है वह सबकुछ सच सच बता दूंगी। उसने कहा कि छोडो इन बातों जो भी

होगा वो वहाँ पहुँचने पर देखा जायेगा इस बात के तनाव से हम अपना हनीमून क्यों खराब करें। यह कहकर वह रिजवी से आलिंगनबद्ध हो जाती है।

राकेश घर पहुँचकर अपने आप को तनाव रिहत महसूस कर रहा था। वह संतुष्ट था कि उसकी बात मानते हुये आनंद के परिवारजनों ने पुलिस में मामला दर्ज करा दिया अब सच्चाई सामने आ सकेगी। वह अपने बगीचे में बैठकर आनंद के विषय में सोचते सोचते पुरानी बातों में खो गया था।

आपकी मुस्कुराहट
अंतःकरण में जगाती थी चेतना,
आपके आने की आहट
बन जाती थी प्रेरणा,
आपकी वह स्नेह सिक्त अभिव्यक्ति
दीपक के समान अंतरमन को
प्रकाशित करती थी।
आप विलीन हो गए अनंत में,
संभव नहीं जहाँ पहुँचना।
अब आपके आने की
अपेक्षा और प्रतीक्षा भी नही।
दिन-रात, सूर्योदय और सूर्यास्त
वैसा ही होता है,
किंतु आपका न होना
हमें अहसास कराता है
विरह और वेदना का।

अब आपकी यादों का सहारा ही
जीवन की राह दिखलाता है
और देता है प्रेरणा
सदाचार, सहृदयता से
जीवन को जीने की।

आनंद एक सफल उद्योगपति के साथ साथ बहुत ही भावुक एवं दयालु व्यक्तित्व का धनी था। वह जीवन में व्यवहारिक व्यक्ति था और उसने अपनी सारी संपत्ति, धन दौलत को चार हिस्सों में बांट दिया था, जिसमें से तीन हिस्से अपनी पत्नी एवं दोनो बेटों के नाम कर दिये थे। चौथा हिस्सा उसने अपने स्वयं के लिये रखा हुआ था। उसके दोनो बेटे दुबई में अपना स्वतंत्र व्यापार करते थे। उसकी पत्नी का अधिकतम समय उसके वृद्ध माता पिता की देखभाल में बैंकॉक में बीतता था क्योंकि उसके पत्नी के साथ संबंध मधुर नहीं थे। वह अपने परिवार को बहुत चाहता था परंतु परिवार से दूर होने के कारण अपने को अकेला महसूस करता था।

एक दिन बातों ही बातों में उसने अपने अकेलेपन की चर्चा की और किसी सुंदर एवं संभ्रांत महिला से मित्रता करने की इच्छा व्यक्त की। वह इस बारे में काफी गंभीर था और अपनी बातचीत में हमेशा इस विषय के बारे जिक्र करता था। एक दिन हम लोग रेस्त्रां में बैठकर आपस में बातचीत कर रहे थे तभी अचानक मानसी वहाँ पर आ गई और मुझे देखकर बोली कि आपको देखकर औपचचारिकतावश मिलने आ गई। मैनें उसको भी बैठने के लिये कहा और उसका परिचय आनंद और गौरव से करवाया। आनंद उसकी खूबसूरती और सरल व्यवहार को देखकर दंग रह गया। आनंद ने पुनः सबके सामने

अपना पुराना राग अलापना शुरू कर दिया कि मैं बहुत अकेला हूँ और अपार धन दौलत के बाद भी सुखी जीवन से वंचित हूँ। उसकी बात सुनकर मानसी बोली कि सच में आप बहुत दुखी जीवन जी रहे हैं और आपको एक सहारे की बहुत आवश्यकता है। मानसी से आनंद से पूछा कि आपके पास धन दौलत की कोई कमी नहीं है आपसे तो कई महिलाएँ मित्रता की इच्क्षुक होंगी। यह सुनकर आनंद ने कहा कि दौलत की चाह रखने वाली महिलाओं की कोई कमी नहीं है परंतु मुझे ऐसी महिला की आवश्यकता है जिसके मन में मेरे प्रति प्रेम और समर्पण हो, जो मेरी भावनाओं को समझकर मेरा सहारा बनकर मुझे संतुष्टि दे सके।

मानसी राकेश की ओर मुस्कुराकर देखती हुयी आनंद से बोली कि आप इनकी मदद क्यों नहीं लेते हैं ये चाहे तो आपकी इस समस्या को चुटकी में सुलझा सकते हैं। यह सुनकर राकेश बोला कि मैं इस समस्या कि निदान हेतु प्रयासरत हूँ। इस बीच वेटर बिल लेकर आता है गौरव अपना क्रेडिट कार्ड निकालकर वेटर को देते हुये मानसी से बोला आई ऐम ए इंटरनेशनल आर्टिस्ट एंड आई हेव विजिटेड सेवरल कंट्रीज इसलिये मैं हमेशा इंटरनेशनल क्रेडिट कार्ड अपने साथ रखता हूँ इसके बिना मेरा काम ही नहीं चलता है। थोड़ी देर बाद वेटर वापस आकर कहता है कि सर यह कार्ड छः माह पूर्व समाप्त हो चुका है। यह सुनकर गौरव झेंप जाता है। यह देखकर राकेश नकद भुगतान कर देता है। होटल से निकलते समय आनंद मानसी पूछता है कि आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा अब आपसे कब मुलाकात हो पायेगी ? मानसी मुस्कुरा बोली आप कभी भी राकेश जी के साथ मेरे घर आ सकते हैं। इसके बाद मानसी राकेश के साथ चली जाती है।

एक दिन आनंद राकेश के साथ मानसी के घर जाता है वह उसके घर को बहुत ही व्यवस्थित सुंदर और सुसज्जित पाता है। यह देखकर वह मानसी से पूछता है कि क्या यह आपका फ्लैट है। यह सुनकर मानसी कहती है कि नहीं मैं यहाँ किराये से रहती हूँ। यह फ्लैट जहाँ में काम करती हूँ उस कंपनी का है। मेरा घर तो पचमढ़ी के पास है, वह बहुत ही खूबसूरत जगह है। आप जब भी पचमढी आए मेरे घर जरूर आइयेगा। यह सुनकर राकेश कहता है कि नेक काम में देर क्यों की जाए। अगले सप्ताह ही तीन चार दिन मेरे ऑफिस की छुट्‌टी रहेगी, क्यों ना उस समय पचमढी घूमने चला जाए। यह सुनकर आनंद और मानसी भी अपनी सहमति प्रदान कर देते हैं।

अगले सप्ताह पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार राकेश और आनंद गौरव को साथ लेकर पचमढी जाने के लिये प्रस्थान करते है और रास्ते में मानसी के घर रूकते हैं। वहाँ पर उसकी माँ, बहन पल्लवी से मुलाकात होती है। पल्लवी बहुत सुंदर और बातचीत में बहुत निपुण थी। आनंद पल्लवी को लगातार एकटक देख रहा था। वह उसके सौंदर्य एवं बातचीत की निपुणता पर मुग्ध था। मानसी इस बात को भांप गयी और मन ही मन मुस्कुरा रही थी। राकेश ने मानसी और पल्लवी से निवेदन किया कि आप दोनो हमारे साथ पचमढी चलिये। आप यहाँ के निवासी हैं एवं चप्पे चप्पे से वाकिफ है। आपके जाने से हमें पर्यटन में सुविधा के साथ साथ आपका साथ भी मिल जायेगा। मानसी और पल्लवी अपनी माँ से अनुमति लेकर उनके साथ पचमढी चली जाती हैं।

पचमढी पहुँचते पहुँचते शाम हो चुकी थी। सभी एक होटल में रूक कर स्नान के पश्चात लॉन में बैठकर बातचीत कर रहे थे।

बातचीत के दौरान आनंद ने राकेश से पूछा की तुम्हारी और मानसी की मुलाकात कैसे हुयी जो इतनी गहरी मित्रता में बदल गयी। राकेश ने कहा- पचमढ़ी की रमणीक वादियों में वर्षा की बूँदों से नम हुई जमीन से निकलने वाली खुशबू मेरे कवि हृदय को काव्य साधना हेतू प्रेरित कर रही थी। मैं लगभग चार वर्ष पूर्व किसी बैठक में शामिल होने आया था, जिसमें प्रदेश के विभिन्नों शहरों के प्रतिनिधि आये हुये थे। मैं दोपहर के समय होटल में बैठा हुआ भोजन ले रहा था, मेरी सामने के टेबिल पर एक सुंदर व सभ्य दिखने वाली एक महिला बैठी हुयी थी। उसे देखकर मेरे मन में विचार आया कि यदि मैं कवि होता तो एक अच्छी कविता बनाकर उन्हें भेंट कर देता। बैठक के दौरान मेरा उनसे परिचय हुआ मैंने बातों ही बातों में उसको यह बात बताईं उसने मुस्कुरा कर कहा कि आप प्रयास कीजिये शायद सफल हो जाये उसकी बात सुनकर मैंने कविता लिखने का निर्णय लिया और कागज, कलम लेकर बैठ गया। मैंने माँ के ऊपर कुछ पंक्तियाँ लिखी। शाम को भेजन के दौरान मुलाकात होने पर उसके आग्रह करने पर मैंने उसे वो पंक्तियाँ सुनाई। उन्हें सुनकर वह बोली कि इतनी मार्मिक कविता आप नहीं लिख सकते यह किसी और की लिखी हुई हैं। आप भोजन के उपरांत मेरे सामने किसी भी विषय पर लिखकर बतायें। उसके बाद मैने उससे पूछा कि आप मुझे विषय दीजिये मैं कोशिश करता हूँ। तब उसने मुझे प्रेम पर कविता बनाने का आग्रह किया। वह कविता जो मैने उसके सामने लिखी थी वह मुझे आज भी अक्षरशः याद है। राकेश मानसी ओर मुस्कुराकर देखता हुआ कविता सुनाने लगा-

प्रेम है श्रद्धा

प्रेम है पूजा
प्रेम है जीवन का आधार
प्रेमी रहें प्रसन्न
प्रेममय हो उनका संसार
दिलों को जीतो प्रेम से
प्रकृति भी देगी साथ
प्रेम बनेगा जगत की
सुख-शांति का आधार
प्रेम की ज्योति करेगी
सपनों को साकार
प्रेम से जीना
प्रेम से मरना
सबसे करना प्यार
विश्व शांति का स्वप्न
तब ही होगा साकार।

कविता सुनाने के बाद राकेश बोला वह महिला मानसी ही थी इस प्रकार हम लोगों का परिचय हुआ और धीरे धीरे मित्रता प्रगाढ होती गयी। कविता सुनने के बाद सभी राकेश की तारीफ करने लगे। गौरव ने कहा कि अभी तक तो हम तुम्हें उद्योगपति के रूप में जानते थे पर तुम्हारे भीतर कवि हृदय भी है यह आज पता चला। तभी आनंद पल्लवी से पूछता है कि तुम अपने बारे कुछ बताओ। यह सुनकर मानसी बोलती है पल्लवी मेरी छेटी बहन है और यही माँ के साथ रहती है हमारे पिताजी का देहांत हो चुका है। पल्लवी ग्रेजुएट है और किसी अच्छी नौकरी की तलाश में हैं।

इस प्रकार बातचीत करते हुये काफी समय बीत जाता है। इसी वार्तालाप के दौरान आनंद राकेश से कहता है कि मुझे पल्लवी बहुत पसंद है। राकेश मुस्कुरा कर शुभ रात्रि कहकर सोने चला जाता हैं। दूसरे दिन प्रातः नाश्ते के उपरांत पचमढी घूमने का कार्यक्रम बनता है। राकेश जानबूझकर पल्लवी को आनंद के साथ भेज देता है और स्वयं मानसी के साथ होटल में ही रूक जाता है। गौरव अपने किसी मित्र से मिलने के लिये चला जाता है। राकेश इस अवसर का लाभ उठाकर मानसी को अपने कमरे में ले जाकर उसे प्यार भरी नजरो से देखते हुये अपनी बांहों में जकड़ लेता है। मानसी भी मन ही मन यही चाहती थी परंतु अपने आप को छुडाने की कोशिश करते हुये राकेश से कहती है कि अच्छा अब मेरी समझ में आया कि तुमने आनंद और पल्लवी को बड़ी चतुराई से पचमढी घूमने के बहाने दूर कर दिया परंतु गौरव आ गया तो क्या करोगे ? राकेश उसे और मजबूती से आलिंगनबद्ध करते हुये बोला वह आ भी गया तो अपने कमरे में आराम करेगा। इतना कहकर राकेश ने उसे बेतहाशा चूमते हुये बिस्तर पर लिटा दिया और दुनिया जहान को भूलते हुये दोनो एक दूसरे में समा गये।

आनंद पल्ल्वी के साथ पचमढी दर्शनीय स्थल देखते हुये एक उद्यान में पहुँचता है यहाँ पर आनंद अपने विषय में बताते हुये पल्लवी को कहता है कि ईश्वर की कृपा से मेरे पास बहुत धन दौलत है मैं तुमसे बहुत प्रभावित हूँ और तुमसे प्यार करने लगा हूँ मैं तुम्हारा जीवन बना दूँगा। तुम्हें जीवन में किसी चीज की कमी नहीं होने दूँगा। इसके बाद आनंद ने पल्लवी का हाथ पकडकर कहा क्या तुम्हें मेरा प्यार स्वीकार है ? पल्लवी ने आनंद से कहा कि क्या तुम मेरा अतीत नहीं जानना चाहोगे ? आनंद ने कहा कि नहीं मैं वर्तमान

में विश्वास रखता हूँ और भविष्य के बारे में सोचता हूँ मुझे तुम्हारे अतीत से कोई लेना देना नहीं है। यह सुनकर पल्लवी बहुत प्रभावित हुयी और उसकी मौन मुस्कुराहट ही उसकी मानो उसकी स्वीकृति थी। उन्हें घूमते घूमते अब शाम हो चुकी थी और थकान होने के कारण वे होटल वापस आ जाते हैं।

वातावरण में हल्की थंडक थी और अंधेरा होने के साथ ही वातावरण में अजीब सी मादकता छा रही थी। वे सभी आग जलाकर लॉन में बैठे हुये थे। राकेश ने अपनी स्कॉच की बॉटल खोलकर पूछा कि कौन कौन मेरा साथ देगा ? उसने मानसी की ओर देखा वह बोली मैं रेड वाइन ले सकती हूँ। पल्लवी ने कहा कि यदि आनंद लेंगें तो मैं भी ले लूँगी। गौरव और आनंद दोनो ने बियर पीने की इच्छा व्यक्त की। सबकी इच्छानुसार डिं्रक्स मंगवा लिये गये। इस बीच बातचीत के दौरान राकेश ने आनंद से पूछा क्यों भाई दिन कैसा बीता ? दिन अगर अच्छा बीता होगा तो रात भी सुहानी बीतेगी। पल्लवी को क्या क्या दिखाया ? इसे तुम्हारे साथ घूमने में मजा आया कि नहीं ? आनंद ने पल्लवी की ओर मुस्कुराकर देखते हुये कहा कि इसका जवाब तुम्ही दो। वह बोली बहुत मजा आया ईश्वर करे इसी तरह दिन बीतते रहे। गौरव बोला आप लोग तो अपने में मस्त हैं मैं यहाँ अकेला बोर होता हूँ इसलिये मैं वापस जाना चाहता हूँ। मानसी और पल्लवी गौरव से रूकने के लिये आग्रह करते हैं। उनके लगातार अनुरोध पर गौरव उनकी बात मानकर रूक जाता है। पल्लवी ने गौरव से पूछा कि क्या आपकी कोई महिला मित्र नहीं हैं। गौरव ने कहा कि नहीं मैं बहुत व्यस्त व्यक्ति हूँ और अंतरराष्ट्रीय स्तर का चित्रकार हूँ मेरी पेंटिंग की प्रदर्शनी कई देशों में हो चुकी है और मुझे कइ्र पुरूस्कारों से नवाजा गया हैं। मेरे पास इन सारे फालतू कामों के लिये

समय नहीं है। राकेश ने कहा कि हाँ यह सही बात है ये बहुत बडे चित्रकार है इनके पास फालतू खर्च करने के लिये समय और पैसा दोनो नहीं है। यह सुनकर गौरव चिढकर कुछ अंग्रेजी में कुछ बडबडाता है। पल्लवी पूछती है कि आप क्या कह रहें हैं। यह सुनकर राकेश हँसते हुये कहता है कि ये एक बियर और माँग रहे हैं। यह सुनकर सारे लोग हँसने लगे।

राकेश ने बताया कि गौरव का जीवन संघर्ष, कठिन परिश्रम से गुजरा है तब वह आज इस मुकाम खड़ा हुआ है। मैंने गौरव से संघर्षमय जीवन को ध्यान में रखकर एक कविता का सृजन किया है जिसे मैं उसे समर्पित करते हुये आप सब को सुना रहा हूँ।

प्रतिभा, प्रतीक्षा, अपेक्षा और उपेक्षा में
छुपा है जीवन का रहस्य।
सीमित है हमारी प्रतिभा
पर अपेक्षाएँ हैं असीमित।
यदि हम अपनी प्रतिभा को जानें
फिर वैसी ही करें अपेक्षा
तो बचे रहेंगे उपेक्षा से।
प्रतिभावान व्यक्ति सफलता की करता है प्रतीक्षा
वह पलायन नहीं करता
वह करता है संघर्ष
एक दिन वह होता है विजयी
डसे मिलता है सम्मान
दुनिया चलती है उसके पीछे
और लेती है उससे

सफलता और विकास का ज्ञान।
यही है जीवन का चरमोत्कर्ष।
पर कोई भी प्रतिभा
नहीं रहती सदा सर्वदा।
कल कोई और प्रतिभावान
करेगा संघर्ष
और पहुँचेगा उससे भी आगे।
यही है प्रगति की वास्तविकता
कल भी थी
आज भी है
और कल भी रहेगी।

आपस में बातचीत करते करते काफी समय बीत जाता है और राकेश मानसी को लेकर अपने कमरे में सोने चला जाता है। कुछ समय पश्चात गौरव भी अपने कमरे में जाकर सो जाता है। पल्लवी भी जाने के लिये उठ जाती है परंतु आनंद उसे रोक लेता है। कुछ देर आपस में बातचीत करने के बाद आनंद उससे पूछता है कि मैनें तुमसे सुबह कुछ पूछा था परंतु तुमने अभी स्पष्ट जवाब नहीं दिया। मैं तुम्हे बहुत चाहने लगा हूँ। दिन भर मेरे साथ घूमने के बाद तुम मेरे स्वभाव से भी परिचित हो गयी होगी। पल्लवी ने मंद मंद मुस्काते हुये कहा कि इसका जवाब आपको जल्दी ही मिल जाएगा इतने बैचेन क्यों हो रहे हैं। यह कहकर पल्लवी चुपचाप चली जाती हैं। आनंद मन ही मन सोच रहा था कि मैं इसकी मौन मुस्कुराहट को क्या समझूँ ? इसी उधेडबुन में सोचता हुआ आनंद कुछ देर बाद अपने कमरे में जाता है। वह कमरे में पहुँचकर लाइट ऑन करता है

और सामने बिस्तर के पास गुलदस्ता देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है। वह पास में जाकर उस पर लगे हुये कार्ड को पढता है जिस पर आई लव यू लिखा हुआ था। जैसे ही वह पीछे की ओर घूमता है सामने उसे पल्लवी बैठी हुई मिलती है। वह खिलखिलाकर हँसते हुये कहती है कि अब तो आपको प्रश्न का उत्तर मिल गया ना। आनंद आनंदविभोर होकर पल्लवी को अपनी बाँहों में भर लेता है। पल्लवी अपने आप को छुडाने की कोशिश करती है यह देखकर आनंद उसे अपनी ओर खींचकर उसके होंठो पर अपने होंठ देता है। पल्लवी अपने आप को आनंद की बाहों से छुडाने का प्रयास करते हुये कहती है कि आप यह क्या कर रहे हैं। आनंद ने कहा कि प्यार कर रहा हूँ, और क्या करूँगा। प्यार तो बातों से भी हो सकता है। बातों से तो प्यार का इजहार होता है प्यार तो आंखों से भी नजर आ जाता है। मुझे दार्शनिक बनने में कोई रूचि नहीं है यह कहकर आनंद उसे और नजदीक खींच लेता है। पल्लवी बोली मैं आज बहुत थकी हुयी हूँ अभी छोडो ना कल प्यार कर लेना, देखो एक कहावत है कि कल कभी नहीं आता इसलिये कल के भरोसे क्यों रहूँ। दीदी को पता हेगा तो क्या सोचेगी। राकेश के साथ दीदी अंदर बेडरूम में जाकर कोई गप्प थोडी ना मार रही होगी वे दोनो प्यार के आनंद में खो चुके होंगे। ऐसा करना पाप नहीं है क्या। बिल्कुल नही।

काम, वासना नहीं है
कामुकता वासना हो सकती है।
काम है प्यार के पौधे के लिये
उर्वरा मृदा।
काम है सृष्टि में

सृजन का आधार।
इससे हमें प्राप्त होता है
हमारे अस्तित्व का आधार।
काम के प्रति समर्पित रहो
यह भौतिक सुख और
जीवन का सत्य है।
कमुकता से दूर रहो,
यह बनता है विध्वंस का आधार
और व्यक्तित्व को करता है दिग्भ्रमित।

यह सुनकर पल्लवी भी धीरे धीरे अपने आप को आनंद को समर्पित करती चली जाती है। वे दोनो एक दूसरे में खोकर आलिंगनबद्ध होकर दो जिस्म एक जान हो जाते हैं।

दूसरे दिन सुबह नाश्ते पर सभी लोग मिलते हैं। सभी अपने आप को प्रसन्न और तरोताजा महसूस कर रहे थे। नाश्ते के दौरान पल्लवी ने आनंद से कहा कि आनंद आज मुझे कुछ खरीदारी करनी है। यह सुनते ही आनंद ने फौरन पचास हजार रूपये निकालकर पल्ल्वी को दे दिये और कहा कि डार्लिंग तुम्हारी जो इच्छा हो तुम खरीद सकती हो यदि कोई कमी हो तो मुझसे और मांग लेना। यह देखकर सभी भौंचक्के रह जाते हैं। पल्लवी प्रसन्न होकर आनंद की ओर मुस्कुराते हुये धन्यवाद कहकर मानसी को साथ लेकर खरीददारी करने चली जाती है। उनके जाने के बाद राकेश ने आनंद से कहा कि तुमने यह क्या किया ? अभी तुम्हारी मुलाकात हुये दो चार दिन ही तो हुये है इस प्रकार इतना रूपया लुटाना ठीक नहीं है। गौरव भी

राकेश की बातों से सहमति व्यक्त करता हैं। यह सुनकर आनंद कहता है कि मुझे जीवन में जिसकी तलाश थी वह पल्लवी के रूप में पूरी हो रही है, मैं उसके ऊपर फिदा हूँ और उसे दिलोजान से चाहने लगा हूँ उसकी खुशी के लिये मैं कुछ भी कर सकता हूँ यह पचास हजार रूपये तो कुछ भी नहीं हैं। राकेश कहता है कि मेरा फर्ज था तुम्हें समझाना आगे जैसी तुम्हारी इच्छा हो। तुम अपनी मर्जी के खुद ही मालिक हो एक बात याद रखना, इश्क में अपने कदमों को संभालकर रखना कहीं यह बहक गये तो संभालना मुश्किल हो जाता है।

दो तीन दिन और बिताने के बाद सभी वापस अपने अपने घर आ जाते हैं। घर पहुँच कर आनंद पल्लवी को अपनी कंपनी में अच्छे वेतन पर नौकरी दिलवा देता हैं। पल्लवी नौकरी के लिये आ जाती है और आनंद उसे सारी सुविधाएँ उपलब्ध कराता है। आनंद का अधिकांश समय पल्लवी के साथ बीतने लगा। वह जब भी शहर के बाहर जाता पल्लवी को भी साथ ले जाता था। वह उसके ऊपर बेशुमार दौलत लुटाने लगा। यह सारी बातें राकेश को गौरव और मानसी के माध्यम से पता चलने लगी। राकेश ने गौरव से आनंद को समझाने के लिये कहा, गौरव ने कहा कि वह क्या दूध पीता बच्चा है जो मैं उसे समझाऊँ। तुमने भी तो समझाने का प्रयास किया था इसका नतीजा यह निकला कि तुम्हारे और आनंद के संबंधों के बीच में खटास पैदा होने लगी। यह सुनकर राकेश चुप हो जाता है।

मानसी भी पल्लवी की शानों शौकत देखकर जलने लगी थी और उसकी भी इच्छाएँ बढ़ती जा रही थी जिसकी पूर्ति के लिये वह राकेश के ऊपर दबाव बनाने लगी और प्रायः आनंद की दरियादिली के उदाहरण देने लगी। मानसी की रोज रोज की मांग और आनंद से

तुलना करने पर राकेश को चिढ़ होने लगी और एक दिन राकेश ने उसे स्पष्ट कह दिया कि मैं जो कुछ तुम्हारे लिये कर सकता था मैनें कर दिया है इससे अधिक किसी प्रकार की आशा मत करो। इन्हीं कारणों से राकेश और मानसी के संबंधों की मधुरता खत्म हो गयी थी। आनंद पल्लवी में इतना अधिक आसक्त हो चुका था कि उसने सारी जायदाद पल्लवी के नाम वसीयत लिखकर और उसे बताकर गौरव के पास रखवा दी थी। वसीयत की बात सुनकर पल्लवी अत्यंत प्रसन्न थी और खुशी के मारे पागल हुयी जा रही थी।

इसी समय अचानक चौकीदार ने राकेश को नींद से जगाया। वह हडबडाकर उठ बैठा और पूछा क्या बात है चौकीदार ने बताया साहब दिन का 1 बज गया है आपको आनंद साहब के अंतिम संस्कार में जाना है। राकेश बडबडाया मैं तो बीती हुयी जिंदगी का पूरा सपना देख रहा था अच्छा हुआ तुमने मुझे उठा दिया। राकेश के पास गौरव का फोन आता है कि राकेश तुम वहाँ क्या कर रहे हो तुम्हें तो आनंद के घर पर होना चाहिये था मैं पोस्टमार्टम के लिये गया था। सभी औपचारिकताएँ पूरी करवाकर एक घंटे के अंदर वापस आ रहा हूँ।

राकेश तैयार होकर आनंद के घर चला जाता है। आनंद के घर पहुँचने पर वो देखता हैं कि काफी पुलिस लगी हुयी थी एवं उसका बेडरूम पुलिस द्वारा सील कर दिया गया था। आनंद के यहाँ काफी भीड इकट्ठी थी उसका मृत शरीर पोस्टमार्टम होकर आने वाला था। वहाँ पर उपस्थित लोग तरह तरह की बात कर रहे थे और राकेश व परिवारजनों से वस्तुस्थिति पूछ रहे थे। उन्होने भी यही कहा कि हमें भी उतना ही मालूम है जितनी खबर आपको है। हमारी जानकारी भी वहीं तक सीमित है। पुलिस के द्वारा खोजबीन के उपरांत ही सच सामने आ सकेगा। आनंद के परिवारजन शोक में डूबे हुये थे। कुछ

समय के उपरांत आनंद का शव आ गया और अंतिम यात्रा प्रारंभ होने के पूर्व उनके परिजनों को पोस्टमार्टम रिर्पोट में शरीर में जहर का पाया जाना एवं इसी कारण मृत्यु होना बता दिया गया। अब अंतिम यात्रा प्रारंभ हो गयी। अंतिम संस्कार के उपरांत राकेश और गौरव अपनी अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि देते हुये अपने घर वापस आ जाते है।

पुलिस, जाँच अधिकारी विक्रम सरकार के नेतृत्व में सबसे पहले सील किये हुये बेडरूम की जाँच उसके परिवारजनों को साथ लेकर करती है। उसके कमरे की एक एक चीज की गहराई से जाँच होती है जिसमें फारेंसिक विभाग के अधिकारी भी अपना सहयोग देते हैं। उसी समय पुलिस का खोजी कुत्ता आनंद के कपडे सूंघने के उपरांत घर से बगीचे की ओर भागकर एक स्थान पर रूक जाता है इसके बाद वह कुछ खोजता हुआ बगीचे के दूसरे किनारे तक जाकर जमीन के आसपास सूंघने लगता है। पुलिस के कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर वह दो स्थानों पर क्यों जा रहा है ? उसी समय चौकीदार ने बताया कि रात 10ः15 बजे के आसपास मैंने किसी को भागकर दीवार फाँदते हुये देखा वह वह बिल्कुल आनंद साहब के जैसा ही दिख रहा था परंतु आनंद साहब की मृत्यु की खबर सुनकर मैने इस बात को महत्व ना देते हुये सीधे उनके कमरे की और दौड़ लगायी। विक्रम सरकार ने उससे पूछा कि तुम्हे यह कैसे पता हुआ कि तुम्हारे साहब की मृत्यु हो गयी। वह बोला कि रमेश उपर की मंजिल से चिल्ला रहा था कि जल्दी दोडकर आओ साहब को पता नहीं क्या हो गया है ?

आनंद का बेटा कमरे की जाँच के दौरान बताता है कि एक घडी जो कि आनंद के शव से निकाली गयी थी वह पुलिस अधिकारियों को देकर कहता है कि वह पापा की नहीं हैं। पापा ऐसी घडी कभी नहीं पहनते थे उनकी घडी बहुत महँगी थी। पापा के हाथ में हमेशा हीरे

की अंगूठी रहती थी जो कि नहीं पाई गई। पुलिस को जाँच के दौरान उनका रिवाल्वर, मोबाइल एवं पेन भी नहीं मिला परंतु उनके लॉकर में रखे रूपये एवं मूल्यवान आभूषण सुरक्षित रखे हुये थे एवं कमरे में रखा हुआ सारा सामान सुव्यवस्थित था इससे प्रतीत हो रहा था कि कमरे में किसी प्रकार की कोई झडप भी नहीं हुयी।

टेबल पर दो कप चाय रखी हुयी थी जिसमें चाय वैसी की वैसी ही रखी हुयी थी जैसे किसी ने पी नहीं हो। पुलिस ने नौकरों से पूछताछ के दौरान यह जानना चाहा कि चाय कौन लेकर आया था। यह जानकर सब हैरान रह गये कि सभी नौकरों ने कहा कि वे चाय लेकर नहीं आये। अब चाय किसके लिये आयी थी और कौन व्यक्ति ऊपर पहुँचा इसकी जानकारी भी किसी नौकर को नहीं थी।

विक्रम सरकार को पूछताछ के दौरान वह डाक्टर कौन था एवं किसके बुलाने पर आया यह भी पता नहीं हो पा रहा था जिसने आनंद की मृत्यु की हृदयाघात के कारण होना बताया था। आनंद के केयर टेकर रवि ने बताया कि एक डाक्टर आया था जिसे वह नहीं जानता था उसने कार से उतरकर मुझसे पूछा कि सेठ जी को क्या हो गया है मैं उसे तुरंत लिफ्ट से ऊपर लेकर आया जहाँ पर डाक्टर ने उनकी जाँच करके उन्हें मृत घोषित कर दिया। इसके बाद डाक्टर तुरंत वापस चले गये। साहब की मृत्यु की खबर से हम विचलित हो गये जिससे हम उस डॉक्टर का नाम एवं कार का नंबर भी नहीं देख सके।

पुलिस के सामने एक और प्रश्न था कि बेडरूम से जुडे हुये ड्राइंग रूम में सोफा सेट के पास चाय रखी हुयी थी चाय को बिना पिये ही आनंद अपने बेडरूम में राइटिंग टेबल पर आकर क्यों बैठ गये। उनकी मृत्यु यदि यहाँ पर बैठे बैठे हो गयी तो दूसरा व्यक्ति

क्या उस समय वहाँ उपस्थित था या पहले ही बिना चाय पिये जा चुका था। परंतु कोई भी यह जानकारी नहीं दे पा रहा था कि वह दूसरा व्यक्ति था कौन ? अब यह पूरा मामला काफी संदिग्ध नजर आने लगा था।

इसके बाद जाँच अधिकारियों ने विचार विमर्श करके खोजी कुत्ते को वापस बुलाया और एक बार पुनः उसे परीक्षण करने का मौका दिया। इस बार वह जहाँ पर सोफे के पास चाय रखी हुयी थी वहाँ पर जाकर वह सीधे दो तीन कमरों से होता हुआ एक कचरे के ढेर के पास पहुँचता है और वहाँ पर रूक कर वह भौंकता है। यह देखकर उस स्थान की बारीकि से सफाई कराई जाती है। सफाई के दौरान एक टूटा हुआ कप और प्लेट मिलता है जिसे वह बार बार सूंघता है। उस कप प्लेट को फॉरेंसिक विभाग दस्ते पहनकर सावधानी पूर्वक उठाकर जप्त कर लेते हैं।

विक्रम सरकार ने नौकरों से बात करके घटनाक्रम का एक खाका बनाया जो इस प्रकार था। शाम 7 बजे आनंद का गौरव के घर जाना लगभग 8 बजे वापस आ जाना इसके बाद 8ः30 बजे गौरव का आनंद के पास आना 9 बजे उसका वापस चले जाना, आनंद का अपने कर्मचारी के यहाँ जाना और लगभग 10ः15 बजे वापिस आकर अपने बेडरूम की ओर प्रस्थान करना इसी समय के आसपास चौकीदार का आनंद की छाया के समान घर के पिछवाडे से बाऊंड्री वाल को कूदकर पार करते हुये देखना उसी समय रमेश नाम के नौकर का उपर की मंजिल से चिल्लाकर कहना कि साहब को क्या हो गया है वे बेहोश हो गये हैं। 10ः30 बजे रात में आनंद के नजदीकी दोस्तों को फोन पर उसकी मृत्यु होने की सूचना प्राप्त होना। लगभग 10ः45 बजे रमेश का आनंद का बेडरूम में आना उसके पूछने पर

कि साहब क्या दूध लेंगे का कोई जवाब प्राप्त नहीं होना उसकी अवस्था देखकर उसका सशंकित होना और डॉक्टर को फोन करना। डॉक्टर की अनुपलब्धता का मालूम होना इसके एक लगभग दो तीन मिनिट बाद ही एक नये डॉक्टर का केयर टेकर के साथ आना रात 11 बजे के लगभग उसका आनंद की मृत्यु का हृदयाघात से होना बताना और तुरंत वापस चले जाना। रात 11ः15 बजे तक रवि के द्वारा बैंकाक और दुबई में उसके परिवारजनों को इसकी सूचना देना। रात 11ः30 बजे सबसे पहले राकेश और गौरव का पहुँचना और उनके द्वारा नौकरों से आनंद की मृत्यु के संबंध में पूछताछ करना और जानकारी प्राप्त करना। सुबह उसके परिवारजनों के आने के बाद गौरव और राकेश का उनसे वार्तालाप करना और प्रातः 9 बजे रिपोर्ट दर्ज कराना। पुलिस द्वारा शव को पोस्ट मार्टम के लिये ले जाना और रिर्पोट में जहर के कारण मृत्य होना।

सभी कर्मचारियों से गहन पूछताछ शुरू की गयी परंतु उन्हें कोई खास जानकारी प्राप्त नहीं हुयी। आनंद की मृत्यु के समय उसके घर में सिर्फ तीन लोग थे पहला केयर टेकर रवि दूसरा चौकीदार रामसिंह और तीसरा उसका विश्वसनीय नौकर रमेश। बाकी सभी कर्मचारी विवाह में शामिल होने गये हुये थे। अब पुलिस ने रवि के संबंध में पूछताछ करके जो जानकारी प्राप्त की उसके अनुसार वह आनंद का एक विश्वसनीय व्यक्ति था। वह आनंद के मसूरी के बंगले में विगत दो वर्ष से कार्यरत था उसके अच्छे व्यवहार व होशियार होने के कारण आनंद ने उसे अपने पास बुला लिया था। उसका बेरेकटोक पूरे घर में आना जाना था। वह आनंद की मृत्यु से दुखी होकर लगातार रो रहा था। उससे गहराई से पूछा गया कि तुमने उस डॉक्टर को जिसे तुम ऊपर लेकर आये, क्या तुम जानते थे? उसने कहा नही।

डॉक्टर को बुलाने की बात ऊपर हो रही थी तो मैनें सोचा इसी डॉक्टर को बुलाया गया होगा मैं तो बिना समय गंवाए, लिफ्ट से उसे ऊपर ले गया। उसने जाँच के उपरांत आनंद साहब के दुखद निधन की बात बताकर तुरंत ही वापस जाने की इच्छा व्यक्त की और मैं उनका बैग लेकर उन्हें नीचे तक छोड आया।

जाँच अधिकारियों ने चौकीदार से पूछा कि तुमने कार का नंबर नोट किया था या नहीं । वह बोला कि साहब वैसे तो सभी आने जाने वालों का नंबर नोट किया जाता है परंतु साहब कि तबीयत की खबर सुनकर हम सभी बहुत घबडा गये थे और हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि हम क्या करें। गेट पर सीसीटीवी कैमरा लगा हुआ है उसमें जरूर ये सब बातें दर्ज होंगी और पूरी जानकारी मिल जायेगी। यह सुनकर जाँच अधिकारी तुरंत सीसीटीवी कैमरे को अपने कब्जे में ले लेता है। उन्हें उस समय घोर निराश होती है कि किसी शातिर व्यक्ति ने रात 9 बजे ही कैमरे को स्विच ऑफ कर दिया था। अब यह स्पष्ट हो गया था कि घटनाएँ पूर्व नियोजित थीं एंव आनंद की हत्या, लगभग तय मानी जा रही थी। अब पुलिस विभाग को टूटे हुये कप प्लेटों की फोरेंसिक रिर्पोटों प्राप्त हो जाती है जिसमें जहर का होना पाया गया।

पुलिस की टीम अब निश्चित निष्कर्ष पर पहुँच गई थी कि आनंद की मृत्यु स्वाभाविक ना होकर प्रायोजित थी। उन्होने अपने एक बहुत ही वरिष्ठ एवं होशियार ऑफिसर श्री हरीश रावत को बुलाया और यह जाँच उनके जिम्मे सौंपी गई। उन्होने आनंद के बेडरूम, ड्राइंगरूम एवं घर की पुनः जाँच की उन्हें बगीचे के एक कोने में पिस्टल से चली गोली प्राप्त हुयी परंतु वहाँ खोजने पर भी रिवाल्वर नहीं मिल पाया और ना ही इसका उद्देश्य पता हो पाया।

बेडरूम में जाँच करने पर एक ड्र्राज में किसी रजिस्ट्री के असली कागजात एवं उनकी फोटोकॉपी रखी हुयी थी। उसने जब इसके पन्नों की संख्या गिनी तो फोटोकॉपी में एक पन्ना ज्यादा पाया गया जिसमें सबसे नीचे आनंद के हस्ताक्षर थे। इससे यह मालूम हुआ कि असली कागजात से वह पन्ना जिसमें आनंद के हस्ताक्षर थे और उसके ऊपर शायद धोखे से क्रास करना भूल गया होगा जिससे इस पन्ने का उपयोग आनंद के हस्ताक्षर होने के कारण कही भी किया जा सकता है इसे पन्ने को प्राप्त करने में जिसका भी हाथ होगा वह बहुत ही चतुर और चालाक व्यक्ति होगा। उसने पोस्टमार्टम रिर्पोट बुलाकर गहराई से अध्ययन किया और यह पाया कि मृतक का अपेंडिसाइटिस एवं प्रोस्टेट का आपरेशन हो चुका है उसने आनंद के परिवार वालों से इस संबंध में पूछा तो मालूम हुआ कि आनंद का ऐसा कोई भी आपरेशन नहीं हुआ था यह जानकर तो हडकंप की स्थिति निर्मित हो गई गौरव से पूछा गया कि तुम्हें पोस्टमार्टम रिर्पोट पढी थी या नहीं उसने कहा मैंने रिर्पोट नहीं पढी। मेरे दिमाग में तो सिर्फ जहर के विषय में जानकारी प्राप्त करना था और वह सही पाया गया। अब आनंद के परिजन, वरिष्ठ अधिकारीगण एवं मित्रगण सकते में आ गये क्या आनंद की जगह किसी दूसरे व्यक्ति का दाहसंस्कार हो गया है।

अब जाँच अधिकारीगण गौरव से चर्चा करते हैं वे उसको बुलाकर उससे पूछते हैं कि उस दिन आनंद ने आपके घर पर क्या बातचीत की थी ? आप रात में वापस आनंद के पास क्यों गये थे ?

गौरव ने कहा कि आनंद एक भावुक व्यक्ति था वह छोटी छोटी बातों में भावावेश में आकर अपने पर नियंत्रण खो देता था और ऐसी अवस्था में मुझसे या राकेश से संपर्क करके सलाह लेता था। वह

पल्लवी से काफी अंतरमन से जुडा हुआ था। उसने उस पर दिल खोल कर खर्च किया था एवं अपनी संपत्ति की एक बहुत बडे हिस्से को अपनी मृत्यु के उपरांत वसीयत के माध्यम से उसे देना चाहता था। उसने इस प्रकार की वसीयत लिखकर पल्लवी को बताकर मेरे पास रख दी थी। पल्लवी का व्यवहार दिन प्रतिदिन कठोर होता जा रहा था। वह अपने पुराने परिचित रिजवी से विवाह करके अपनी जिंदगी बसाना चाहती थी। यह बात आनंद को मालूम होने पर उसे गहरा सदमा पहुँचा उस रात वह मुझे यह बताने के लिये आया था उसने वसीयत भी निरस्त कर दी है। और उसके कागजात मुझे देकर वापस चला गया था। उसके जाने के कुछ मिनिट पहले उसके मोबाइल पर फोन आया था पर यह किसका फोन था यह जानकारी मुझे नहीं हैं। जाँच अधिकारी ने कहा कि हमने आनंद के द्वारा पिछले एक माह में उसके द्वारा किये गये सभी फोन कालों का विवरण संबंधित विभाग से निकलवाने का निर्देश दे दिया है और हमें अगले दो दिनों के अंदर ही यह प्राप्त हो जायेगा। अब आप हमें आपके आनंद के घर जाने का मकसद बताइये ?

गौरव बोला आनंद के फोन करने पर मैं वापस उसके पास गया था। आनंद उसी वसीयत के संबंध में मुझसे सलाह लेना चाहता था कि उसे क्या करना चाहिये ? मैनें उसे समझाया कि इतनी जल्दबाजी की क्या जरूरत है आराम से सोच समझ कर काम कीजिये परंतु पता नहीं क्या बात थी आनंद बहुत घबडाया हुआ था। मैंने उसको सलाह दी थी कि तुम अपनी मूल्यवान संपत्ति अपने बेटों के नाम पर ही कर दो। अपने परिवार के अलावा किसी और को देने से क्या फायदा है। तुमने उसका वैसे ही बहुत कुछ देकर भला कर दिया हैं। उसे मेरी बात सही लगी और तुरंत ही नयी वसीयत अपने हाथ से बनाकर मुझे

दे दी। गौरव ने वसीयत के सभी कागजात पुलिस के सामने रख दिये। और कहा कि मुझे इस बात का बहुत आश्चर्य है कि गोपनीय कागजातों की जानकारी पल्लवी को कैसे हो गयी । उसका फोन मेरे पास इस बात की सच्चाई जानने के लिये आ गया। मैने उसे स्पष्ट रूप से कुछ भी ना बताकर गोलमोल ढंग से बात खत्म कर दी। वह दो दिन बाद वापिस आ रही है। और व्यक्तिगत रूप से मुझसे मिलेगी ऐसा उसने फोन पर कहा था। क्या इन बातों की जानकारी राकेश को भी है?

नहीं उसे वसीयत के बदले जाने के संबंध में कुछ भी नहीं मालुम मैंने आनंद के निर्देशानुसार इसकी जानकारी किसी को भी नहीं दी यहाँ तक कि मेरी पत्नी भी इससे अनभिज्ञ है। आपके और आनंद की मित्रता कैसे और कब हुयी? आपके ऊपर उनका इतना विश्वास क्यों और कैसे था। गौरव बोला मुझे राकेश ने आनंद से मिलाया था मुझे उसने कहा था कि आनंद बहुत अकेलापन महसूस करता हैं उसे एक विश्वसनीय दोस्त के रूप में सहायक की भी आवश्यकता है। वह जब शहर से बाहर जाता है तब भी वब उसे अपने साथ बाहर ले जाएगा। मुझे घूमने फिरने का शौक बचपन से ही रहा है मैं अपनी मेहनत के बल पर धन कमामकर यहाँ तक पहुँचा हूँ मेरे दोनो बेटे अमेरिका में उच्च पदों पर कार्यरत हैं तथा मैं दिनभर खाली रहता हूँ इसलिये मैने राकेश को सहर्ष इस बात की स्वीकृति दे दी थी। इसके बाद आनंद से परिचय धीरे धीरे प्रगाढ़ मित्रता में बदल गया। मैं उसका बहुत ही विश्वसनीय मित्र हो गया जिससे वह अपने मन की बातें खुलकर बतलाता था।

हरीश रावत ने पल्लवी और आनंद की मित्रता के विषय में जब प्रश्न किये तो गौरव ने विनम्रतापूर्वक कहा कि वह इतना ही जानता

है कि पल्लवी आनंद के ऑफिस में उच्च पद पर कार्यरत है वह किसी के भी निजी जीवन में ना ही दखल देता है और ना ही जानने की इच्छा रखता है वह जाँच अधिकारी के प्रश्नों को टाल गया और कुछ भी कहने से उसने इंकार कर दिया।

शहर के पत्रकारों ने वहाँ पहुँच कर इस विषय पर विस्तृत जानकारी माँगना प्रारंभ कर दिया। इस स्थिति की गंभीरता को देखते हुये पुलिस अधिकारियों ने प्रेस कांफ्रेंस करके पत्रकारों से धैर्य रखने की प्रार्थना की और उन्हें बताया गया कि जाँच प्रक्रिया अभी प्रारंभिक अवस्था में है और हमें संदेह है कि आनंद की मृत्यु स्वाभाविक ना होकर के हत्या है। हमारी जाँच जैसे जैसे आगे बढेगी वैसे वैसे हम आपको समय पर सूचित करते रहेंगे। यह बात पत्रकारों को नहीं बताई गई कि पोस्टमार्टम रिर्पोट से संदेह हो गया है कि आनंद के स्थान पर उसके किसी हमशक्ल का अंतिम संस्कार कर दिया गया है ताकि जाँच प्रक्रिया प्रभावित ना हो सके।

अब आनंद के परिवारजन दिवंगत शरीर के आगे के संस्कार करने से मना कर देते है इससे एक विचित्र स्थिति सबके सामने निर्मित हो गयी थी और अब आगे क्या किया जाए यह सभी सोच रहे थे। सभी लोग हरीश रावत की होशियारी की तारीफ कर रहे थे कि उसने जाँच प्रक्रिया को एक नयी दिशा दे दी। अब यह प्रश्न उठ रहा था कि आनंद यदि जीवित है तो वह कहाँ हैं, वह दीवार कूदने के बाद सीधे पुलिस के पास क्यों नहीं गया, वह जीवित है भी या नही, उसने अपने परिजनों या मित्रजनों को संपर्क क्यों नहीं किया यह गुत्थी किसी के भी समझ में नहीं आ रही थी और इससे पुलिस के अधिकारी भी आश्चर्यचकित थे।

वे आनंद और पल्लवी के बीच के संबंधों की समीक्षा कर रहे थे। राकेश ने उनको कहा कि आपको इन विषयों पर जानकारी प्राप्त हो चुकी होगी अब आप मेरे से क्या जानना चाहते है ? जाँच अधिकारी बोला कि आपसे जो जानकारी प्राप्त होगी वह निश्चित रूप से पूर्णतया सत्य होगी। राकेश बोला मैं और आनंद बचपन के मित्र रहे हैं हम दोनो ने ग्रेजुएशन तक एक ही साथ पढाई की है। हम लोगों के आपस में व्यापारिक संबंध भी बहुत मधुर रहे हैं। उसने पल्लवी के बारे में बताते हुये कहा कि उसीके कारण मेरे और आनंद के बीच में कभी कभी तनाव हो जाता था। आनंद भावुक होने के कारण उसके कहने पर ना जाने क्यों उस पर धन लुटाने के लिये मजबूर हो जाता था। मैंने उसे ऐसा करने से रोकने का प्रयास किया जिसके कारण पल्लवी ने आनंद के कान भरना चालू कर दिये यह उसकी कमजोरी थी कि वह कान का बहुत कच्चा था। पल्लवी अब चाहती थी कि मेरे आनंद से मतभेद हो जाये ताकि उसका आनंद के ऊपर पूर्ण नियंत्रण हो सके।

वह अपनी बहन मानसी को भी मेरे से दूर करने के लिये प्रयासरत रहती थी। गौरव से मित्रता मैने ही करायी थी और वह इससे बहुत खुश था क्योंकि वह एक कंजूस प्रवृत्ति का व्यक्ति है उसे आनंद के साथ बिना किसी खर्च के आने जाने के मिलता था। आनंद मुझे कहा करता था कि कुछ वर्ष पूर्व तक मसूरी की किसी लडकी के साथ उसकी मित्रता थी परंतु उसका विवाह हो जाने के बाद उसकी मुलाकात बंद हो गयी थी। इस विषय पर मैंने कभी विस्तार से नहीं जानना चाहा। हरीश रावत यह सुनकर चौंका और मन में उसने निश्चय कर लिया था कि वह पुलिस की एक टीम मसूरी भेजकर उसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त करेगा।

उसी चर्चा के दौरान राकेश के पास फोन आता है कि वह कल अमेरिका के वीसा के लिये दिल्ली जा रहा है और उसे वीजा मिलते ही दूसरे दिन अमेरिका चला जाएगा। वह कहता है कि वह बहुत तनाव में है और उससे ऐसी पूछताछ की जा रही है जैसे वह शक के दायरे में हो उसे पल्लवी भी परेशान कर रही है इसलिये वह कुछ समय अपने बेटे के साथ अमेरिका में बिताना चाहता है यह जानकार कि गौरव विदेश जाने का प्रयास कर रहा हैं। जाँच अधिकारी इसकी सूचना अपने वरिष्ठ अधिकारियों को दे देता है। वे आपस में विचार विमर्श करके गौरव को कहते हैं कि जब तक जाँच प्रक्रिया चल रही है तब तक वह कही बाहर नहीं जा सकता है। यह सुनकर गौरव भडक जाता है और उसकी बहस उन अधिकारियों से हो जाती है। उनके यह कहने पर कि यदि गौरव उनकी बात नहीं मानेगा तो उसका पासपोर्ट हमें मजबूरन जप्त करना पडेगा।

राकेश पूछताछ के दौरान मानसी के साथ उसके संबंधों को स्वीकार कर लेता है। वह कहता है कि मानसी उसकी बहुत ही नजदीकी मित्र है जो कि उसके लिये समर्पित है परंतु इन बातों का आनंद की मृत्यु से कोई संबंध नहीं है। यह उसका निजी मामला है अतः इसमें मेरे व्यक्तिगत मामलों के पूछताछ की कोई आवश्यकता नहीं है। जाँच अधिकारी के यह पूछने पर कि आपकी नजर में कौन संदिग्ध हो सकता है ?

राकेश कहता है मुझे पल्लवी की गतिविधियों पर संदेह है। वह वसीयत के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये बहुत आतुर है और वही सबसे ज्यादा आनंद की नजदीकी मित्र थी।

मानसी ने पूछताछ के दौरान जाँच अधिकारी को बताया कि आनंद एक बहुत ही जिंदादिल, दयालु एवं अच्छे व्यक्ति थे। उन्होने

पल्लवी के लिये बहुत कुछ किया परंतु उसके मन में आनंद के प्रति कोइ्र लगाव या समर्पण नहीं था। वह केवल धन के लिये ही प्रेम का ढोंग करती थी और अपने बचपन के मित्र रिजवी से प्यार करती थी। मैंने आनंद को इसकी जानकारी देकर आगाह किया था परंतु पता नहीं पल्लवी ने ऐसी कौन सी जादू की छडी घुमायी थी कि आनंद चकरी के समान उसके आगे पीछे घूमता था। वह जो चाहती थी किसी भी प्रकार से आनंद से प्राप्त कर लेती थी। उसी ने आनंद को उकसाया था कि उसके ना रहने पर उसे कोई आर्थिक रूप से दिक्क्त ना हो इसकी व्यवस्था अपनी वसीयत में कर दे। आनंद ने अपनी समस्त संपत्ति वसीयत के अनुसार उसके नाम लिख दी थी। इस वसीयतनामे को मुझे और पल्लवी को भी बताया था। पल्लवी के रिजवी से शादी करने के कारण आनंद को बहुत मानसिक पीडा हुयी थी एवं उसका दिल टूट गया था। इससे नाराज होकर उसने संभवतया वसीयत में बदलाव कर दिया था ऐसा आनंद की बातों से महसूस होता था। मैंने कभी उससे इसकी वास्तविकता जानने के लिये नहीं पूछा। मुझे ये बातें गौरव से पता होती थीं। यह जानकर पल्लवी बहुत नाराज थी और उसने आनंद से इस बारे में बातचीत की थी। मुझे पल्ल्वी ने बताया था कि आनंद ने स्वीकार किया है कि उसने पुरानी वसीयत रद्द कर दी थी एवं नई वसीयत जानकारी मुझे नहीं दी।

जाँच अधिकारी के पूछने पर कि पल्लवी आनंद के कितने नजदीक थी ? क्या उसको सब बातों की जानकारी रहती थी, क्या वह आनंद के व्यापारिक मामलों में भी दखलंदाजी करती थी ? आनंद से उसने क्या क्या प्राप्त किया ? एंव आगे उसकी क्या अपेक्षाएँ थी ?

मानसी ने कहा कि आनंद पल्लवी को अपना समझता रहा परंतु पल्लवी के मन में धन लोलुपता की भावना भरी हुयी थी और इसके

लिये वह कुछ भी समझौता कर सकती थी। उसे मुझसे भी कोई मतलब नहीं था आनंद ने उसको इतना धनवान बना दिया था कि उसे अपने आप पर घमंड आ गया था। उसका आनंद के व्यापारिक मामलों में कुछ भी लेना देना नहीं था और ना ही आनंद उसकी दखलंदाजी पसंद करता था। आनंद से उसने क्या क्या प्राप्त किया यह बता पाना तो मुश्किल है परंतु उसे क्या नहीं मिला बैंक में फिक्स डिपाजिट, सोने और हीरे के आभूषण, निवास के लिये एक बढिया फ्लैट, कार एवं नौकर चाकर आदि सभी कुछ उसे प्राप्त थे। उसकी अपेक्षाएँ बढती ही जा रही थी अब वह आनंद के ना रहने पर उसकी सारी संपत्ति की मालिक बनना चाहती थी। जाँच अधिकारी ने पूछा कि आनंद की मृत्यु में परेक्ष या अपरोक्ष रूप से पल्लवी का कितना हाथ हो सकता है ?

मानसी ने कहा कि चाहे कुछ भी हो जाए आनंद की मृत्यु वह कभी नहीं चाहती थी। उसके हर स्वार्थ की पूर्ति हो रही थी एवं वह बहुत सुखी जीवन बिता रही थी। आनंद के ना रहने से उसकी इन सभी सुविधाओं का अंत हो जाता इसलिये वह ऐसा सोच भी नहीं सकती थी। वह तो विवाह के तुरंत बाद आज से चार दिन पहले हनीमून के लिये गोवा चली गयी है और दो तीन दिन बाद वापस आएगी। ऐसा घिनौना काम वह नहीं कर सकती यह उसकी क्षमता के बाहर है। उसका पति रिजवी भी ऐसे किसी काम में उसे सहयोग नहीं देगा। इसके अतिरिक्त यदि आप कोई जानकारी चाहते हैं तो उसके वापिस आने पर उससे पूछ सकते हैं। मानसी से इतनी जानकारी मिलने के पश्चात जाँच अधिकारियों का शक पल्लवी के प्रति और भी गहरा गया और वे उसके लौटने का इंतजार करने लगे।

अभी तक प्राप्त जानकारी के आधार पर प्रम ुख जाँच अधिकारी हरीश रावत मसूरी के संबंध में प्राप्त जानकारी को काफी महत्व देता है। दूसरे दिन पल्लवी के हनीमून से वापिस आने की सूचना प्राप्त हेती है जाँच अधिकारी उसके वापिस आने पर उसे पूछताछ के लिये उसके पास पहुँच जाते हैं। वह भी इसके लिये पहले से ही तैयार थी और उसने कहा कि आप मुझसे क्या जानना चाहते हैं ? जाँच अधिकारी पूछता है कि आनंद के बारे में क्या जानती हैं ? क्या आप को किसी पर शक है ?

पल्ल्वी कहती है मुझे आनंद जी के नहीं रहने का बहुत गहरा सदमा पहुँचा है वे मेरे लिये देवता तुल्य थे और उन्होने जो कुछ मेरे लिये किया वह अकल्पनीय है और मैं उनका ऋण कभी नहीं चुका सकती। मुझे वापिस आने के बाद ही उनकी संदेहास्पद मृत्यु की बातों का पता चला और मैं इससे आश्चर्यचकित हूँ। आप लोग इसकी गहराई से जाँच करे ताकि वस्तुस्थिति हम सभी को मालूम हो सके। मैं अपनी ओर से पूरा सहयोग करने के लिये तैयार हूँ। पल्लवी बोली कि मैं आनंद को बहुत नजदीक से जानती हूँ , वह इतना भावुक व्यक्ति था कि मुझसे संबंधित मामलों मे विचलित हो जाता था इसलिये मैंने उसके रिजवी के विषय में सारी जानकारी दे दी थी परंतु उस समय तक मेरा उसके साथ विवाह करने का इरादा नहीं था। वक्त बीत रहा था और मेरे मन में अपना घर बसाने की इच्छा हो रही थी। एक दिन रिजवी मेरे पास आया और उसने बताया कि उसके माता पिता उसे शादी हेतु दबाव बना रहे हैं। उसने मुझसे स्पष्ट पूछा कि तुम मुझसे शादी करना चाहती हो या नहीं ? मैने सोचा कि यदि मुझे अपना घर बसाना है तो रिजवी से अच्छा रिश्ता मुझे कोई दूसरा नहीं मिल सकता आनंद के साथ तो यह रिश्ता संभव ही नहीं था

क्योंकि वह पहले से ही शादी शुदा था और हमारी उम्र में भी बहुत अंतर था। मैने सोच विचार कर रिजवी से शादी करने का निर्णय ले लिया और इसकी जानकारी सबसे पहले मैने आनंद को दी वह यह सुनते ही भैचक्का रह गया और मेरी कल्पना के विपरीत उसने मुझे ऐसा नहीं करने के लिये कहा मैं तो सोचती थी कि मेरे हित को देखते हुये वह खुश होकर मुझे प्रोत्साहित करेगा परंतु उसने मुझे प्राप्त होने वाली सुविधाओं को समाप्त करने का संकेत दे दिया इससे मुझे गहरी ठेस पहुँची। आनंद के ऐसे व्यवहार कि मैने कभी अपेक्षा नहीं की थी। मैं अपने निर्णय पर अटल थी और मैने रिजवी के साथ कोर्ट मैरिज कर ली। मुझे उसकी मृत्यु की दुखद सूचना गोवा में ही प्राप्त हुयी तो हमें बहुत दुख हुआ। मुझे यह बताया गया था कि मेरे विवाह करने के कारण आनंद ने आत्महत्या कर ली। इससे रिजवी बहुत परेशान था कि कहीं मुझ पर कोई आरोप ना लग जाये और बेवजह हम लोगो को परेशान होना पडे।

पल्लवी ने बताया कि मेरे आनंद से मित्रता से पहले रंजना नाम की एक संभ्रांत परिवार की मसूरी की लडकी के साथ उसकी गहरी मित्रता थी। उसने आनंद पर विवाह हेतु दबाव बनाया तो उसने स्पष्ट कह दिया था कि वह अपनी पत्नी को तलाक नहीं दे सकता इसी के कारण उनकी देस्ती में दरार आ गई और रंजना ने किसी डॉक्टर के साथ विवाह रचा लिया। आपको यह बात गौरव ने नहीं बताई क्या, वह तो हमेशा आनंद के साथ मसूरी जाता था और उसके गेस्ट हाऊस में एक एक माह तक रहता था इन दोने की रंगरलियों को देखा करता था। राकेश को भी इसकी जानकारी थी आनंद उसे भी रंजना से मिलवाना चाहता था परंतु उसने कभी इसमें रूचि नहीं दिखाई ना ही वह कभी मसूरी गया। इन दोनो की प्रेम कहानी से मसूरी के संभ्रांत

लोग वाकिफ थे। मुझे ये बातें आनंद ने ही बताई थी। यह सुनकर जाँच अधिकारी ने पल्लवी को इससे संबंधित सभी बातें विस्तारपूर्वक बताने का निवेदन किया कि रंजना कौन थी, कहाँ से आयी थी और उसका उद्देश्य क्या था ?

पल्लवी ने बताया कि उसके पिता के पास सेव के बगीचे थे। वह ग्रेजुएट थी एवं फर्राटेदार अंग्रेजी बोलती थी और दिखने में बहुत सुंदर थी। आनंद ने उसे हीरेइन बनाने का झाँसा देकर उससे मित्रता की थी और धीरे धीरे उनकी मुलाकातें बढती गइ्र। आनंद उसको मँहगें मँहगे उपहार देता था। वह फिल्म में रोल दिलाने का कहकर अपने साथ बंबई ले गया। वहाँ दोनो पाँच सितारा होटल में रूके थे। बंबई में आनंद एक प्रसिद्ध फिल्म निर्माता से परिचित था। उसने उसे बुलाकर रंजना को उसकी आगामी आने वाली फिल्म मे भूमिका देने का आग्रह किया था। उस निर्माता ने दूसरे दिन एक स्टूडियों में बुलाकर रंजना की फोटो ली और उसकी वॉइस टेस्ट के उपरांत उसे शूटिंग में काम देने का निर्णय ले लिया। इससे रंजना का दिल बाग बाग हो गया और उसकी आँखों में आनंद के प्रति प्रेम झलकने लगा। दूसरे दिन उसे फिल्म में काम करने का अवसर प्रदान करने का एग्रीमेंट कर लिया गया और बतौर एडवांस उसे दस हजार रूपये भी प्राप्त हुये। ये अलग बात है कि इन सब में दोने की मिली भगत थी और वो फिल्म इसके आगे बनी ही नही। उस रात रंजना ने खुशी खुशी अपने को आनंद को समर्पित कर दिया था। उसका फिल्म निर्माता मित्र भी अपनी सहभागिता चाहता था परंतु आनंद ने उसे अगली बार का आश्वासन देकर बात समाप्त कर दी। दूसरे दिन आनंद और रंजना बडे खुश थे दोने का अपना अपना उद्देश्य पूरा हो गया था। यह बात

मुझे आनंद से ही पता हुयी, यह सुनकर मैं सजग हो गई थी कि आनंद जितना साधा दिखता है उतना है नही।

पल्लवी ने कहा कि दोनो खुशी खुशी मसूरी आ गये यहाँ रंजना ने अपने माता पिता को शूटिंग के बारे में बताते हुये अपने एग्रीमेंट एवं दस हजार रूपये मिलने के विषय में बताया। रंजना के पिता ने फोन पर धन्यवाद देते हुये उसे शाम को भोजन के लिये बुलाया जिसे आनंद स्वीकार करते हुये अपने मित्र गौरव को भी लाने का जिक्र करते हुये उनकी अनुमति माँगी जिसे उन्होने सहर्ष स्वीकार कर लिया। आनंद के साथ गौरव भी उनके निवास पर पहुँचा और रंजना की सुंदरता देखकर गौरव तो मंत्र मुग्ध हो गया वह स्वयं अपना परिचय देते हुये बताने लगा कि वह इंटरनेशनल आर्टिस्ट है और रंजना का एक पोट्रेट बनाकर भेंट करना चाहता है इसके लिये एक दो दिन कुछ समय के लिय रंजना को गेस्ट हाऊस आना पडेगा, जिसे वह स्वीकार कर लेती हैं।

रंजना ने आनंद के बंबई के संपर्कों की तारीफ के पुल बाँधते हुये आनंद के सम्मान और प्रतिष्ठा को और भी अधिक बढा दिया। आपस में चर्चा के दौरान उद्योग व्यापार के संबंध में रंजना के पिताजी से आनंद बातचीत करता रहा। उन्होने बताया कि उनके सेव के कई बागान है परंतु यहाँ पर सेव के दाम इतने कम हो जाते है कि अपेक्षित मुनाफा नहीं मिल पाता है। यहाँ पर दूर दूर से व्यापारी आकर सेब खरीद कर ले जाते है और कई गुने ज्यादा दाम पर बेचकर लाभ कमाते है। आनंद उनको सलाह देता है कि आप ज्यूस मेनिफेक्च्युरिंग प्लांट क्यों नहीं डाल लेते है। यहाँ पर सस्ती बिजली उपलब्ध है, आद्योगिक शांति है व कर मुक्त आय का प्रावधान सरकार द्वारा किया गया है। इनका लाभ उठाकर अपने ही उत्पादन

के सेब से यह प्लांट डाला जा सकता है इसमें यदि आपको टेक्नॉलॉजी की आवश्यकता हो तो मैं मदद कर सकता हूँ। रंजना के पिताजी आनंद को भागिदारी का प्रस्ताव देते है। आनंद विनम्रतापूर्वक कहता है कि मुझे भागीदारी नहीं चाहिये मैं वैसे ही आपको सभी मदद दे दूँगा। मैं इस उद्योग से संबंधित प्रोजेक्ट रिर्पोट आप के पास भिजवा दूँगा जिन्हें पढकर आप निर्णय ले सकते है।

रंजना बीच में बोली कि आप लोग तो व्यापार की बातों में उलझ गये। इन बातों को कल आप लोग बैठकर अपने कार्यालीन समय पर कर लीजियेगा अभी तो कुछ मनोरंजक बातें करें। आनंद उसकी तारीफ करते हुये उसे यह कहकर प्रोत्साहित करता है कि एक दिन तुम अभिनेत्री के रूप में बहुत नाम कमाओगी। तुम्हे कठिन परिश्रम, पक्का इरादा और दूरदर्शिता से काम करना होगा। रंजना की माताजी बोली कि आपका ऐसा ही आर्शीवाद इस पर रहा तो निश्चित रूप से यह जीवन में बहुत तरक्की करेगी यह सुनकर गौरव के चेहरे पर कुटिल मुस्कान आ गई। रात बीतती जा रही थी और ठंड भी बढती जा रही थी इसलिये सबको भोजन जल्दी परोस दिया गया। भोजन के उपरांत आनंद धन्यवाद देकर रंजना को कल पोट्र्रेट के लिये आने का आमंत्रण देकर वापिस हो गया। रास्ते में गौरव ने हँसते हुये उससे कहा कि देखो मैने तुम्हारा काम बना दिया है। अब वह पोट्रेट के लिये आया करेगी और तुम्हारा समय अच्छे से व्यतीत होता रहेगा। आनंद ने मुस्कुराते हुये कहा कि पोट्रट अच्छे से बनाना कही ऐसा ना हो कि बनाओ आदमी का और बन जाए किसी जानवर का। इस पर दोनो हँसते हुये आपस में मजाक के वातावरण में बात करते हुये अपने बंगले वापिस आ जाते है।

अब रंजना का आनंद के घर और आनंद का रंजना के घर बिना किसी रोक टोक के आना जाना प्रारंभ हो जाता है। वे रेज दिन में एक बार मिला करते थे और आपस में प्यार में खेकर सभी मर्यादाओं को पार कर देते थे। एक दिन रंजना ने आनंद के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा और वह यह जानकर हतप्रभ हो गई कि आनंद तो पहले से ही विवाहित था। आंनद ने विनम्रतापूर्वक शादी के प्रस्ताव के अस्वीकार करते हुये कहा कि मैं अपनी पत्नी को नहीं छोड सकता। यह सुनकर रंजना को धक्का लगता है और वह आनंद से मिलना जुलना बंद कर देती है। इससे आनंद व्यथित हो जाता है और गौरव उसे समझाता है कि जितने दिन अच्छे बीत गये सो बीत गये अब आगे के लिये उसे भूल जाओ और किसी नई खोज में अपना समय दो। यही तुम्हारे जीवन की नियति है।

रंजना को दुख इस बात का बहुत था कि आनंद ने पहले उसके नाम पर बिना उसके कहे या आशा के अपनी वसीयत उसके नाम कर दी थी और एक दिन उसका फोन आया कि वह वसीयत बदल रहा है यदि तुम ऐसा चाहती हो तो जैसे अपने पहले मधुर संबंध थे वैसे बनाए रखो। यह सुनकर वह बहुत क्रोधित हुई और उसने आनंद को बहुत खरी खोटी सुनाई उसे तब तक बंबई के फिल्म निर्माता की हकीकत भी पता हो गई थी कि वह सब एक नाटक था जिसे आनंद ने केवल उसका जिस्म पाने के लिये किया था। उसने आनंद को डाँटते हुये फोन पर कहा था कि मैं कभी ना कभी अपने इस अपमान का बदला तुमसे जरूर लूँगी। गौरव को यह पता होने पर उसने आनंद को अब मसूरी ना जाने की सलाह दी थी और इसके बाद वह मसूरी नहीं गया।

जाँच अधिकारी के पूछने पर कि तुम्हें इतनी बातें कैसे पता है तो उसने बताया कि कुछ तो गौरव ने और अधिकांश बातें स्वयं आनंद ने उसे बताई थी। इससे वह समझ गई थी कि आनंद किसी एक से बंधकर रहने वाला व्यक्ति नहीं है यह मेरे साथ भी दे तीन साल बिताएगा और फिर किसी नई खोज में निकल जाएगा। इसलिये मैं इससे अधिक से अधिक धन प्राप्त करने की लालसा रखती थी और मैंने सही समय पर अपना विवाह रिजवी के साथ कर लिया।

जाँच अधिकारी को नौकरों ने पूछने पर बताया कि उस दिन आनंद के पुराने कर्मचारी के यहाँ उसकी बेटी का विवाह था जिसमें शामिल होने के लिये उसके निवास के अधिकांश कर्मचारी गये हुये थे। उस रात वहाँ पर दो नौकर जिसमें एक चौकीदार और दूसरा रमेश था। इसके अतिरिक्त रवि नाम का केयरटेकर भी वहाँ पर मौजूद था उसने बताया कि अधिकांश कर्मचारी अवकाश पर थे इसलिये वह अपने कार्यालीन समय के अतिरिक्त वही पर रूक गया था। जाँच अधिकारी को नौकरों ने जो पहली जानकारी दी थी उसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं मालूम था। रवि किसी भी बात का जवाब मुझे नहीं मालूम कहकर चुप हो जाता था। उससे यह पूछने पर कि तुम साहब के पास कितनी बार ऊपर उनके पास गये थे तो उसने कहा कि रमेश ने जब चिल्ला कर कहा कि अरे साहब को क्या हो गया है तो वह तुरंत भागता हुआ ऊपर पहुँचा। इसके बाद चौकीदार ने आवाज दी कि डाक्टर साहब आ गये है तो मैं तुरंत ही लिफ्ट से नीचे जाकर उन्हे लेकर उपर कमरे में ले गया और उन्हे छोडने नीचे तक गया। इसके बाद मैं डर और घबराहट से नीचे ही रह गया। मैं गौरव और राकेश जी के आने पर उनके साथ ऊपर आया। इसके अतिरिक्त इस संबंध में वह कुछ भी नहीं बता पा रहा था परंतु उसके चहरे से प्रतीत हो

रहा था कि वह काल्पनिक दुखी था जो कि जाँच अधिकारी हरीश रावत को खटक रहा था। वह यह सेच रहा था कि अपराधी जो भी हो वह बहुत शातिर था और उसे इस बात का ज्ञान था कि नौकर की बेटी की शादी के कारण अधिकांश कर्मचारी गैरहाजिर रहेंगे। रवि की बातों से पता हुआ कि वह विगत दो वर्षों से आनंद के मसूरी के घर में नौकरी कर रहा था और जब आनंद ने मसूरी जाना बंद कर दिया तब उसको आनंद के घर पर बुला लिया गया। जाँच अधिकारियों को यह आश्चर्य लग रहा था कि रवि को आवश्यकता से अधिक छूट मिली हुई थी वह आनंद के कमरे में बेरोकटोक आता जाता रहता था उसे मसूरी की रंजना के बारे में पूरी जानकारी थी परंतु उसने जाँच के दौरान इस बात का कोई जिक्र नहीं किया। जाँच अधिकारी गौरव के द्वारा भी रंजना के बारे में कुछ भी ना बताना इसका मतलब समझने का प्रयास कर रहे थे।

इसी समय पुलिस द्वारा मसूरी भेजी गई टीम के प्रमुख का फोन आता है और उनके द्वारा दी गई जानकारी से सभी आश्चर्यचकित रह जाते हैं उन्होने बताया कि रवि सेना का एक भगोडा व्यक्ति है वह आज से सात आठ साल पहले सेना में था, उसकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी उसकी बहन की शादी में जो कि पिछले साल ही संपन्न हुई थी उसके खानदान की थोडी बहुत बची जमीन एवं अन्य संपत्तियां शादी की व्यवसथा और दहेज देने में बिक चुकी थी तथा उसके ऊपर काफी कर्ज भी हो गया था। उसके पास कर्जदारों द्वारा प्रतिदिन रकम वापसी का दबाव बढता जा रहा था इसलिये वह मसूरी छोडकर आनंद के गृहनगर में जाने के लिये खुशी खुशी तैयार हो गया। मसूरी के संभ्रांत परिवारों में आनंद और रंजना की दोस्ती चर्चा का विषय थी और आनंद द्वारा धोखा दिये जाने के

कारण उनकी सहानुभूति रंजना के साथ थी। मसूरी में वास्तव में आनंद की जान को खतरा था क्योंकि रंजना के निकट संबंधियों ने उसको सबक सिखाने का निश्चय कर लिया था जिसकी जानकारी गौरव को मिलते ही उसने आनंद को मसूरी ना जाने की हिदायत दी थी।

वह रवि को भी आंनद के घर पर बुलाने से खुश नहीं था परंतु यह आनंद का निजी मामला था और उसे रवि के ऊपर बहुत विश्वास था। वह गौरव को बुलाकर उससे मसूरी के बारे में कुछ भी ना बताने का कारण जानना चाहता था और वह इन परिस्थितियों में अपने मित्र आनंद की जाँच प्रक्रिया को छोडते हुये उसके अमेरिका जाने के प्रयास के विषय में उलाहना देते हुये कहता है कि तुम कैसे मित्र हो जिस आनंद ने तुम्हें इतना मान सम्मान दिया अपनी हर निजी बातों को तुम्हें बताया तुम्हारे ऊपर घूूूमने फिरने में लाखों रूपये खर्च किये उसकी मृत्यु सामान्य है या कोई साजिश यह जाने बिना तुम्हारा मन में बाहर जाने का विचार कैसे आया? तुम सच सच बताओं कि तुम्हें और क्या जानकारी है अन्यथा हमें तुम्हें पुलिस हिरासत में लेना पडेगा और जब यह समाचार पत्रों में छपेगा तुम्हारी सारी प्रतिष्ठा खत्म हो जाएगी। यदि तुम अभी भी चुप रहते हो तो हमें आगे सख्त कार्यवाही तुरंत आरंभ करनी होगी यह सुनकर गौरव का होश उड गया और वह घबराहट में पसीने पसीने हो गया।

उसने बताया कि आनंद ने रंजना के प्रति अपनी सारी संपत्ति की वसीयत की थी उसकी मूल प्रति उसके पास है इसके बाद उसने वसीयत बदलकर पल्लवी के नाम करने की मूल प्रति भी उसके पास सुरक्षित हैं आनंद की मृत्यु की रात्रि में जब उसको आनंद ने बुलाया था तो वह दस्तावेज लेकर उसके पास गया था। आनंद बहुत विचलित

था और पल्ल्वी द्वारा शादी कर लेेने के कारण वह उसकी सलाह चाहता था। वह किस के नाम पर वसीयत करे उसने मुझे भी जायदाद का काफी बडा हिस्सा देने की मंशा बताई थी परंतु मैंने इसे अस्वीकार कर दिया था। इसके दो कारण थे एक तो मुझे रूपयों की कोई आवश्यकता नहीं थी। मेरे खर्च सीमित है जो कि मेरी आय से बहुत कम है। और दूसरा मैं आनंद के स्वभाव से वाकिफ था। वह हर दो तीन साल में जो उसके निकट रहता था उसे वह छोडकर किसी और को विश्वासपात्र बना लेता था मैंने उसे सुझाव दिया तुम अपने बेटों के नाम पर अपनी वसीयत कर दो परंतु तुम इतनी हडबडी में क्यों हो अभी तो तुम्हारी काफी उम्र बाकी है इसे तुम आराम से सोच समझ कर भी बाकी उम्र में कर सकते हो। आनंद बोला मुझे मेरी जान का खतरा है कभी भी मेरे साथ हादसा हो सकता है। मुझे फोन पर धमकियाँ मिल रही हैं। यह सुनकर मैंने उसको कहा कि तुम पुलिस की मदद क्यों नहीं लेते। कौन है जिससे तुम्हें खतरा महसूस होता है मुझे बताओं उसने दबी जुबान में किसी को ना बताने की कसम दिलाते हुये नाम बताया वह पल्लवी का था। मैं यह सुनकर काफी चौंक गया। तब आनंद बोला मैने तुम्हे इस कारण भी बुलाया है कि तुम्हारी जान को भी उतना ही खतरा है जितना मैं अपने लिये महसूस कर रहा हूँ। तुम्हें मेरे और पल्लवी के संबंध में सभी जानकारियाँ हैं यही तुम्हारे लिय खतरा बन गई हैं। तुम सावधानीपूर्वक रहना। इसके बाद मैं वापस अपने घर आ गया।

आज की स्थिति में हरीश जी मैं अत्यंत दुविधा में फँसा हुआ हूँ आनंद की पल्लवी के नाम की वसीयत मेरे पास है यदि इसे मैं उसे दे दूँ तो वह पूरी संपत्ति की मालिक बन सकती है आनंद इस वसीयत को समाप्त करके दूसरी वसीयत मेरे सुझाव के अनुसार अपने दोनो

बेटों के नाम पर करना चाहता था। मैं उसके घर से जब वापस आ रहा था तो मुझे रास्ते में उसने फोन पर बताया कि उसने वकील को बुलाया है और वह वसीयत को रद्द करके अपने बेटों के नाम पर वसीयत बना रहा है। इससे स्पष्ट है कि वह अपनी जायदाद पल्ल्वी को नहीं देना चाहता था परंतु वकील आया या नहीं यह मुझे नहीं पता। वह किस वकील को बुलाना चाहता था यह भी मुझे नहीं पता और उसके बेटों के नाम पर उसने नई वसीयत उस रात बना दी थी या नहीं इसकी भी जानकारी मुझे नहीं हैं।

हरीश इस जानकारी को देने हेतु गौरव का शुक्रिया अदा करता है और कहता है कि अभी तक किसी ने भी आकर यह नहीं बताया है कि वसीयत किसके पास हैं। ऐसी परिस्थिति में तुम्हारी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है यदि तुम पल्लवी की वसीयत सामने नहीं लाते हो तो उसे कोई जायदाद प्राप्त नहीं होगी और किसी वसीयत के ना रहने के कारण उसकी सारी संपत्ति उसके बेटों और उसकी पत्नी को मिलेगी। आज के समय में तुम्हारे जैसा ईमानदार, निष्ठावान एवं समर्पित व्यक्ति मिलना मुश्किल है। तुम्हारे मन में यदि कपट या लालच होता तो तुम यह वसीयत पल्ल्वी को देकर करोडो रूपये हजम कर सकते थे। मै तो तुम्हे शक के दायरे में लेता हुआ तुम्हे हिरासत में लेने आया था, तुम्हारे घर के बाहर पुलिस फोर्स खडी है और वह जेब से निकालकर उसके नाम क वारंट उसे बताता है परंतु मैं अब खाली हाथ वापस जा रहा हूँ तुम यह बात धोखे से भी किसी के मत बताना। क्योंकि यदि यह पल्लवी को पता हो गया तो वह वसीयत को प्राप्त करने के लिये तुम्हारे साथ येन केन प्रकारेण कैसा भी व्यवहार कर सकती है।

गौरव हरीश को धन्यवाद देता हुआ पूछता है कि अब तो आपको मैने इतनी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है आप पल्लवी को गिरफ्तार क्यें नहीं कर लेते। हरीश कहता है कानून अंधा होता है हम बिना किसी ठोस सबूत के हम उसके ऊपर कोई भी कार्यवाही करते है तो दूसरे दिन ही उसे न्यायालय से उसे जमानत मिल जाएगी और वह छूट जाएगी। हम पल्लवी के खिलाफ कोई भी कार्यवाही ठोस सबूत प्राप्त होने के बाद ही करेंगे। उसके पति रिजवी का भी कोई क्रिमिनल रिकार्ड नहीं है। मेरे पास अभी दो घंटे पहले ही पिछले माह के मोबाइल एवं लैंडलाइन से किये गये टेलीफोन नंबरों का विवरण प्राप्त हुआ जिसका अवलोकन मेरी टीम के सदस्य कर रहे है। इसमें मसूरी का एक नंबर जो कि रंजना का है उस पर प्रतिदिन चार से पाँच बार बातचीत की गई है यह फोन आनंद ने ही किये हैं रंजना की ओर से एक भी टेलीफोन नहीं आये। यह एक आश्चर्यजनक बात है कि आनंद को क्या आवश्यकता थी जो इतने फोन वह करता था। और ऐसी क्या बात थी जिसके लिये फोन किये गये। क्या तुम कुछ बता सकेगे ? गौरव कहता है कि यह बात तो मुझे भी आनंद ने कभी नहीं बताई परंतु आपकी इस बात से यह मालूम होता है कि उसकी एक माह से परेशानी का कारण कुछ ना कुछ गंभीर मामला रहा होगा और उससे वह वाकिफ नहीं है। यह तो आप रंजना से मिलकर ही मालूम कर सकते हैं। हरीश कहता है कि मेरा तुमसे निवेदन है कि तुम तुरंत मसूरी जाओ और रंजना से पूछकर प्रयास करों कि क्या मामला है क्योंकि पुलिस के जाने से इसका समाधान नहीं होगा। यह कोई ना कोई ऐसा व्यक्तिगत महत्वपूर्ण मामला है जो कि आनंद को परेशान किये हुये था। मुझे नहीं मालूम कि रंजना को आंनद की मृत्यु की सूचना है या नही।

हरीश के अनुरोध को गौरव स्वीकार करके उसी दिन मसूरी रवाना हो जाता हैं। मसूरी पहुँचकर वह सीधे रंजना के पास जाता हैं उसके कुछ कहने के पहले ही रंजना की आँखें में आँसू आ जाते है और वह गौरव से पूछती है कि यह कैसे हो गया। वह यह भी बताती है कि उसे यह सूचना रवि ने उसी रात लगभग 12 बजे दे दी थी। कुछ देर वार्तालाप के बाद गौरव उससे पूछता है कि विगत एक माह से आनंद तुम्हें प्रतिदिन तीन चार बार फोन पर बात करता था। ऐसी क्या बात है जिसके लिये इतनी बार बात करना पड रहा था। रंजना ने भी उसे साफ बताया कि वह उसके बच्चे की माँ बनने वाली है। आनंद गर्भपात के लिये पिछले एक माह से दबाव दे रहा था। मैं गर्भपात के हमेशा खिलाफ रही हूँ मुझे लगता है इससे बडा पाप जीवन में और दूसरा नहीं होता। मुझे एक सप्ताह के अंदर ही अंतिम निर्णय लेना होगा। आपकी इस बारे में क्या सलाह है गौरव कुछ देर सोचने के बाद कहता है जिसकी याद आप संजोए रखना चाहती है जब वही इस दुनिया में नहीं रहा तो इसको जन्म देकर क्या फायदा है। यह आगे जाकर आपके लिये बहुत दुखदायी भी हो सकता है और यदि इसका जन्म होता है तो निश्चित रूप से आपके पति को आपके प्रति संदेह हो ही जाएगा। इन परिस्थितियों में आपका भविष्य अंधकारमय हो सकता हैं। अभी आपके माता पिता को इसकी जानकारी नहीं है यदि उन्हें पता हो गया तो उनका आपके प्रति कैसा व्यवहार रहेगा यह कहना बहुत मुश्किल है। हमारे समाज में अभी यह स्वीकार नहीं है इसलिये मेरी सलाह तो वही है जो आनंद ने आपको दी थी। रंजना भी सोचकर गर्भपात के लिये मानसिक रूप से तैयार हो जाती हैं। वह गौरव से कहती है कि मेरे पिताजी मेरे पति के साथ कल से एक सप्ताह के लिये बाहर जा रहे है मुझे एक रात अस्पताल

में रहना होगा। यही उचित समय है कि मैं दुखी मन से इस कार्य को संपन्न करा लूँ। वह दूसरे दिन गर्भपात करा लेती है।

गौरव मानवीयता के नाते दो दिन के लिये वहाँ रूक जाता है और उसके अस्पताल से छूटने के बाद उसे घर पहुँचाकर उससे विदा लेकर वापिस दुखद स्मृतियों के साथ रवाना हो जाता हैं। इसी बीच हरीश का फोन आता है तो वह उसे विनम्रतापूर्वक कहता है कि मैं वापिस आकर सारी बात बता दूँगा। वह वापिस आकर सबसे पहले राकेश को यह बात बताता है और उससे पूछता है कि क्या मैं यह बात जाँच अधिकारियों को बता दूँ। राकेश कहता है कि जरूर बता दे परंतु ऐसे किसी बयान पर हस्ताक्षर मत करना। राकेश की सलाह के अनुसार वह इस सच्चाई को हरीश रावत को इस शर्त पर बताता है कि वह आनंद के परिवारजनोंं कभी भी इससे अवगत नहीं कराएगा।

हरीश रावत का ध्यान चौकीदार के उस कथन पर जाता है जिसमें उसने कहा था कि रात में 10ः30 बजे के आसपास उसने दीवार फाँदकर भागते हुये किसी को देखा था। अब जाँच अधिकारी हरीश रावत एवं आनंद के परिवारजनों कीएक मीटिंग होती है जिसमें यह प्रश्न सभी के दिमाग में रहता है कि मृतक क्या आनंद ही था या कोई और ? यदि कोई और था तो वह बेडरूम तक कैसे पहुँचा। उसका उद्देश्य क्या था और क्या आनंद जीवित है इन प्रश्नों का जवाब किसी के पास नहीं था एवं सभी आश्चर्यचकित थे कि यह कैसा विचित्र मामला है ? इसका निदान कैसे हो ? आनंद के परिवार के सदस्यों से भी सलाह मशवरा लिया जा रहा था। उनके बेटों ने पुनः इस बात का ध्यान दिलाया कि घडी बदली हुई थी और हीरे की अंगूठी गायब थी।

वे इस बात से प्रसन्न भी हो रहे थे कि आनंद के जीवित रहने की संभावनाएं हैं और धोखें में किसी दूसरे शरीर का दाह संस्कार हो गया यह खबर ना जाने कैसे किसके माध्यम से पत्रकारों तक पहुँच जाती है और अब तो इस खबर के समाचार पत्रों में प्रकाशित होने से शहर में हडकम्प मच जाता है। हरीश रावत अपनी पूरी टीम के साथ सारी बातों का पुनः विश्लेषण करता है। वह सोचता है कि एक बार इससे संबंधित सभी लोगों की पुनः जाँच की जाए परंतु इससे क्या लाभ होगा इसके प्रति वह आशांवित नहीं था इसलिये वह इसे छोड देता हैं यदि यह माना जाए कि आनंद का कोइ्र हमशक्ल था तो वह कौन था, कहाँ से आया था, क्यों आया था किसने भेजा था और इससे पहले वह कभी क्यों नहीं आया। कोइ्र भी व्यक्ति अपनी मृत्यु के लिये नहीं आता इसलिये यह साफ था कि वह जो भी था उसकी वहाँ पर मृत्यु हो जाएगी इससे वह वाकिफ नहीं था क्योंकि उसे जहर दिया गया था। यदि वह अपनी मृत्यु से वाकिफ होता तो वह कभी नहीं आता। जिस चाय में जहर का होना पाया गया उसका कप टूटा हुआ कचरे के ढेर में खोजी कुत्ते ने खोजा था। उस दिन उस समय वहाँ सिर्फ एक नौकर था रमेश जो कि पिछले बीस साल से कार्यरत है। वह चाय बनाने से इंकार कर रहा था तब चाय किसने बनाई और कप बदल दिये गये। चाय में जहर की बात छिपाने के लिये चाय का कप कचरे के ढेर में छिपाने की कोशिश की गई। यह किसी होशियार और चालाक व्यक्ति का काम होना चाहिये तब क्या वहाँ पर आनंद के अलावा दो और व्यक्ति थे। डॉक्टर का झूठ बोलना कि मृत्यु हृदयाघात से हुई है और वह डॉक्टर कौन था इसका किसीको मालूम ना होना। सीसीटीवी कैमरे का बंद होना एवं अन्य घटनायें ये बताती है कि यह बहुत सोची समझी साजिश के तहत किया गया है और

अभी तक हम सभी जाँच में भटक रहें हैं। पोस्टमार्टम रिर्पोट से साफ हो गया है कि आनंद के स्थान पर किसी दूसरे का क्रिया कर्म संपन्न हुआ है और पुलिस की जाँच को सभी मजाक बनाकर हँसी का पात्र बना रहें हैं। पुलिस विभाग के सभी जॉच अधिकारी दुविधा में थे कि यह कैसा विचित्र मामला है जिसका कोई सुराग नहीं मिल रहा है इसमें सभी संदेह के घेरे में है परंतु किसी के भी खिलाफ कोई सबूत नही।

हरीश रावत ने खोजी कुत्ते को वापिस बुलाकर उसे बगीचे में छोड़ दिया वह वापिस उसी स्थान पर जाकर कुछ सूंघने का प्रयास कर रहा था जहॉ पर वह पहले भी गया था। अब जॉच अधिकारियों के निर्देशन पर वहॉ पर खुदाई की गई जिसमें कुछ गहराई पर ही आनंद का रिवाल्वर मिल गया इसकी जॉच करने पर इसमें से तीन गोलियॉ चलने का प्रमाण मिला और किसी ने बड़ी होशियारी से अपने हाथ व उंगलियों के निशान मिटाए हुये थे इसकी गंभीरता से जॉच करने पर रवि के हाथों से कुछ निशान मिलते थे इसलिये रवि को संदेह के घेरे में लेकर उससे कडाई से पूछताछ की गई परंतु वह इतना पक्का था कि उससे पुलिस कुछ भी नहीं उगलवा पाई। यहॉ पर एक बात तो निश्चित हो रही थी कि दीवार फांदकर भागने वाला आनंद ही था और कोई उसकी जान लेने के लिये आतुर था जिसने पहला प्रयास आनंद के बेडरूम में किया जहॉ उन्हें खाली खोका प्राप्त हुआ था दूसरा प्रयास उसके भागकर तेजी से सीढी उतरते हुये किया गया जिसका खोका सीढी के पास पडा था और तीसरा वह अंतिम प्रयास उसके दीवार फांदने के समय किया गया जिसका खोका बगीचे में मिला था यह आनंद का सौभागय था कि निशाना चूक जाने के कारण कोई भी

गोली उसे नहीं लगी और वह अपनी आत्मरक्षा हेतु भागने में सफल हो गया।

रवि के घर की जाँच होने पर आनंद का मोबाइल एवं पेन जमीन के नीचे गड़ा हुआ पाया गया जिसे जब्त कर पुलिस ने रवि से पूछा यह सामान तेरे घर में कैसे आ गया ? इसे छिपा कर क्यों रखा गया था। तुम सच सच बताओ अन्यथा तुमको गिरफ्तार करके सच उगलवा लेना हमारा रोज का काम है। अब रवि घबरा गया और उसने बताया कि यह दोनो चीज मैंने चुपचाप अपने आप इसलिये रख ली थी कि मुझे विश्वास था कि आनंद का विदेश में खाता जरूर होगा और इसका नंबर इन्ही से प्राप्त हो सकेगा।

इसी समय अचानक ही भाग्य से ऐसी घटना घटित हो गई कि उससे जॉच की दिशा निर्धारित हो गई और रवि का अपराधी होना मालूम हो गया। एक दिन दोपहर के समय हिमाचल की एक महिला पुलिस स्टेशन आई और एक फोटो दिखाकर बोली कि यह मेरे पति है और पिछले कुछ दिनों से इनका कोई पता नहीं है। यह जाते समय मुझे पचास हजार रू दे गये थे और बोले थे कि वापस आने पर एक लाख रू और दे दूॅंगा मुझे रवि ने बुलाया है इसलिये वहाँ जा रहा हूँ। रवि को मुझसे क्या काम आ गया है जिसके लिये वह यह रकम मुझे दे रहा है इसका पता वहाँ पर जाने पर ही पडेगा। पुलिस विभाग उस फोटो को देखकर चौंक गया यह हूबहू आनंद से मिलता जुलता चित्र था जिसका दाह संस्कार किया जा चुका था। अब अधिकारीगण उस महिला का बिना बताए कि उसके पति की मृत्यु हो चुकी है उसकी संतानों के बारे में पूछताछ करती है। वह बताती है कि उसका बीस साल एक लडका है जो कि अभी पढ़ रहा है अब पुलिस विभाग

मसूरी फोन करके उसके लडके को तुरंत बुलाने के लिये खबर करते है और दूसरे दिन वह आ जाता है।

रवि को हिरासत में ले लिया जाता है। उसके अपराधी होने से इंकार करने पर उसे उस महिला के सामने शिनाख्त हेतु बुलाया जाता है तो उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगती हैं। उस महिला के पूछने पर कि उसका पति कहाँ है वह रो पड़ा और बोला भौजी अब वह इस दुनिया में नहीं रहा। धोखे से जहरीली चाय पीकर उसकी मृत्यु हो गयी। यह सुनते ही महिला और उसके लडके के करूण रूंदन से वहाँ शोक का वातावरण निर्मित हो गया। हरीश रावत उसके बेटे को समझाकर बताता है कि धोखे से तुम्हारे पिताजी का अंतिम संस्कार हो गया है अब उनकी अस्थियों संगम में विर्सजित करके तुम अपना फर्ज पूरा करो ताकि उनकी आत्मा को शांति मिल सके।

रवि अपना सारा भेद खुल जाने के बाद अपना अपराध स्वीकार कर लेता है एवं विस्तारपूर्वक पुलिस को सबकुछ बताता है।

वह कहता है कि आनंद एक उद्योगपति व संपन्न व्यक्ति है। उन्होने पाँच वर्ष पूर्व एक बंगला मसूरी में खरीदा था। जिसमें वे साल के तीन चार माह रहते थे। मसूरी क्लब में उनकी मुलाकात शमशेर सिंह नामक एक नामी गिरामी व्यक्ति से हुई थी जिनके सेब के बगीचे थे वे आपस में एक दूसरे के करीबी मित्र बन गये और दोनो का एक दूसरे के यहाँ आना जाना होने लगा। मुझे आनंद के बंगले पर केयर टेकर की नौकरी शमशेर सिंह जी ने दिलवाई थी।

एक दिन गौरव नाम के एक चित्रकार भी आनंद जी के साथ मसूरी आये थे। वे उनके साथ शमशेर सिंह जी के यहाँ गये और बातों ही बातों में उन्होने उनकी बेटी रंजना का एक पोट्रेट बनाने की इच्छा व्यक्त की। उन्होने रंजना से अनुरोध किया कि वह दो तीन दिन के

लिये तीन चार घंटे प्रतिदिन आकर अपने पोट्रेट बनाने में सहयोग दे जिसे रंजना ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और प्रतिदिन आनंद के बंगले में गौरव से मिलने हेतु जाने लगी। गौरव ने भी उसका पोट्रेट बना दिया और उसे अंतिम रूप देने के पहले आनंद से कहा कि देखो मैने तुम्हारा काम कितना आसान कर दिया है जब तक पोट्रेट पूरा नहीं होगा तब तक रंजना यहाँ आती रहेगी तुम उसके साथ मित्रता करके उसका फायदा उठा लो, रंजना एक खुले विचारों वाली लडकी थी। उसके कई लोगों से संबंध थे। आनंद ने अवसर को बिना गंवाए रंजना से दोस्ती करके उसके साथ शारीरिक संबंध स्थापित कर लिये।

एक दिन मैंने पर्दे की आड़ से सब कुछ देख लिया था रंजना आनंद से आलिंगनबद्ध होकर एक दूसरे के साथ जीने और मरने की कसमें खा रही थी आनंद उसे अपने दोने हाथों से जकड़ कर उसका चुंबन लेता हुआ उसके सौंदर्य रस में डूबा हुआ था। यह देखकर मेरे तन बदन में आग लग गयी कि मेरे पूर्व मालिक की बेटी अपने परिवार की मान मर्यादा एवं प्रतिष्ठा की परवाह किये बिना सहवास का आनंद ले रही है। आनंद उसके वक्षस्थल पर अपना सिर रखकर कह रहा था कि वह उसके बिना नहीं रह सकता। वह उसके सिर पर हाथ फेरती हुई सहमति व्यक्त कर रही थी कि इतने में उनकी प्रेमलीला गौरव की आवाज सुनकर बंद हो गई और वे बिस्तर से उठकर तैयार होकर बाहर आ गये। थोड़ी देर बाद रंजना दोनो से विदा लेकर अपने घर वापस चली जाती है। यह क्रम प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल हो गया था और उसे सबकुछ देखते हुये भी अनदेखी करना पडता था।

इसके कुछ दिनों बाद रंजना के आनंद से शादी के अनुरोध पर दोनो में मतभेद हो गये और आनंद मसूरी छोडकर भाग खडा हुआ।

शमशेर सिंह को जब डॉक्टर से रंजना के गर्भपात का पता हुआ तो उन्हें बहुत सदमा पहुँचा। उन्होने एक ना एक दिन आनंद से बदला लेने का मन में निश्चय कर लिया था। आनंद साहब ने मुझे अपने गृहनगर अपने पास बुला लिया था और मुझे उनका विश्वासपात्र होने के कारण पूरे घर में कहीं भी आने जाने की छूट थी।

शमशेर सिंह का व्यवसाय भी आनंद ने अपने संपर्कों के माध्यम से चौपट कर दिया था और इस संबंध में वे चर्चा करने हेतु आनंद के पास आये थे। मेरी उनसे मुलाकात के दौरान मैने उन्हें पल्लवी के साथ आनंद जी के संबंधों के विषय में उन्हें अवगत कराया था। उनके पल्लवी एवं उसके होने वाले पति रिजवी से मुलाकात करवाई थी। उन दोनो ने भी अपना दुखड़ा शमशेर सिंह को बताया कि पल्ल्वी का नाम आनंद ने अपनी वसीयत से हटा दिया। अब किसका नाम डाला गया है इससे वे अनभिज्ञ थे क्योंकि इसकी जानकारी केवल गौरव को थी परंतु गौरव कुछ भी बताने को तैयार नहीं था।

इससे कुछ दिनो के पश्चात अकस्मात ही मुझे आनंद के बेडरूम में उसका दस्तखत किया हुआ स्टेम्प पेपर प्राप्त हो गया। मैनें सोच विचार कर इसका उपयोग वसीयत के रूप में करके आनंद के बाद उसकी सारी संपत्ति हथियाने के लिये करने का निश्चय कर लिया था और मैं येन केन प्रकारेण आनंद की मृत्यु चाहता था। रवि बताता है कि उसकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी और उसके उपर बहुत कर्ज हो गया था जिसके कारण उसके परिवार को गांव में कर्जदार बहुत उलाहना सुननी पडती थी। वह रातों रात करोडपति बनने की लालसा रखता था और इसी सोच ने उसके दिमाग में वसीयत की बात आ गयी और वह अपराधीकरण की ओर बढ गया। शमशेर सिंह ने रिजवी से कहा कि आप वसीयत को क्यों महत्व दे रहे हैं इसका उपयोग तो

मृत्यु के बाद होता है यदि स्वाभाविक रूप से आंनद अपना जीवन जीता जाता है तो वसीयत के पन्नों का क्या आप अचार डाल कर चाटेंगे और वसीयत तो कभी भी बदली जा सकती है। इसलिये इससे अच्छा तो यह है कि आनंद का अपहरण करके आप और हम दस दस करोड़ रूपये मांग ले जिसका अपने त्वरित उपयोग कर सकते हैं आनंद की जान लेने से हमारा कौन सा लाभ हो जायेगा।

मुझे ध्यान आया कि आनंद का एक हमशक्ल मसूरी में उसके गांव के पास एक दूसरे गांव में रहता है। जो कि अपनी खेती किसानी करता था मैं छुट्टी लेकर उसके पास गया उसको मैनें पचास हजार रू दिये और एक लाख रू बाद में देने का वादा किया। मैने उससे वचन ले लिया था कि मैं जब बुलाऊँगा वह मेरे पास शहर आ जायेगा मैंने उसे उसका काम बताया था कि उसे एक घर में रात भर रहना है और सुबह उसको वहाँ से वापिस अपने घर चले जाना है उसे ना किसी से मिलना है ना किसी से बात करना है ना हि किसी को कुछ बताना है इस काम के डेढ लाख रू उसे मिल रहे थे और वह यह करने के लिये तैयार हो गया मैंने आनंद की जीवनलीला समाप्त करने का पूरा प्लान बना लिया था और शमशेर एवं रिजवी को यही बताता रहा कि आनंद को बेहोश करके पिछले दरवाजे से बाहर कर दिया जाएगा जहाँ पर उसके आदमी रहेंगे जो उसे वाहन में बैठाकर अनजाने गंतव्य की ओर ले जायेंगें। मेरी इच्छा आनंद की जीवनलीला समाप्त करने की थी क्योंकि मैं स्टेम्प पेपर के उपर वसीयत बना चुका था।

अपने मास्टर प्लान के अनुसार आनंद के हमशक्ल को वह अपने पास शहर बुला लेता है जिस दिन आनंद के नौकर के यहाँ शादी का दिन रहता है उस रात आनंद का अपहरण करने का निश्चय कर लिया जाता है। रवि को मालूम था कि उस रात आठ बजे आनंद

अपने कर्मचारी के यहाँ शादी में जाकर नौ बजे तक वापस आ जायेगा। इस समय उपयोग करते हुये वह हमशक्ल को घर में प्रवेश करा आनंद के घर के ऊपर वाले ड्राइंग रूम तक पहुँचा देगा उस दिन अचानक ही आनंद ने गौरव को रात्रि आठ बजे बुला लिया और नौ बजे तक उसके साथ वार्तालाप करके उसे नीचे छोडकर शादी में शामिल होने चला गया। रवि ने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हमशक्ल को उपर ले जाकर बैठा दिया। अब वह दो कप चाय बनाकर जिसमें एक हमशक्ल को देने और एक आनंद को उसके वापिस आने पर देने के लिये बनाता है जिसमें आनंद के कप में जहर मिला देता है वह दोने कप उसके सामने रखकर नाश्ता लाने वापिस जाता है और इशारा कर देता है कि कौन सा कप हमशक्ल के लिये है। वह इशारे को नहीं समझ पाता और धोखे से आनंद का जहर वाला कप पी जाता है। रवि जब वापिस आता है तब तक हमशक्ल का जीवन समाप्त होकर सोफे पर लुढ़क जाता है यह देखकर रवि के चेहरे पर हवाइयाँ उडने लगती है कि यह क्या हो गया और वह अब क्या करे ? उसे आंनद के आने की आवाज सुनाई देती हैेे। वह यह सोचता है कि यदि आनंद ने यह देख लिया तो वह क्या जवाब देगा कि यह कौन और यहाँ तक कैसे आ गया ? रवि के पास उससे बचने का कोई जबाव नहीं था। वह घबडाकर आनंद का रिवाल्वर निकालकर तुरंत जल्दी जल्दी तीन गोलियां भर लेता है और आनंद को खत्म करने का निश्चय करके छिप कर उसका इंतजार करने लगता है। आनंद तेजी से उपर आने के बाद सीधे अपने कमरे की ओर बढ जाता है। रवि मौका देखकर आनंद पर गोली चला देता है जो कि उसकी बांह से छूती हुयी छिटक जाती है आनंद पीछे देखता है तो रवि के हाथ में रिवाल्कर देखकर तुरंत भाग हैं। सीढियों से उतरते

समय रवि दूसरा शॉट चलाता है जो आनंद को नहीं लग पाता और आनंद तेजी से दौडता हुआ गार्डन को पार करके बाउन्ड्र वाल के उपर से कूद जाता हैं। रवि गार्डन में उसे मारने का तीसरा प्रयास करता है परंतु दुरी ज्यादा होने के कारण गोली वहाँ नहीं पहुँच पाती।

अब रवि के होश उड जाते है एवं चेहरा पीला पड जाता है उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि अब क्या करें। ड्राइंगरूम में बहुरूपिये की लाश पडी हुई थी और असली आनंद बाहर भाग गया था। रवि ने बहुरूपिये की लाश को खींचकर आनंद के बेडरूम में राइटिंग टेबल की कुर्सी पर ऐसे बैठा दिया जैसे वह कुछ सोच रहा हो और लिफ्ट से नीचे आ गया। इसके पंद्रह मिनिट बाद रात्रिकालीन नौकर रमेश प्रतिदिन की भांति चाय लेकर बेडरूम में आता है और सामने चाय रखकर अपने मालिक को आवाज देकर कहता है कि साहब चाय आ गई। परंतु उसकी बात का कोई जबाव नहीं मिलता तो वह पास जाकर देखता है तो उसे कुछ अजीब सा महसूस होता है वह उनको हिलाता है तो लाश लुढक जाती है यह देखकर वह चीख पडता है और कारीडोर से नीचे आवाज देकर सबको बुलाता है। रवि भी भागता हुआ ऊपर आता है। उसी समय रमेश पारिवारिक डाक्टर को फोन करता है वहाँ पता होता है कि डाक्टर विदेश गये हुये हैं। तभी गेट का चौकीदार उपर खबर करता है कि डॉक्टर आ गये हैं। रवि तुरंत नीचे जाकर दूसरे डाक्टर को लेकर लिफ्ट से उपर आता है जो जांच के बाद हृदयाघात के कारण उसे मृत बताकर वापिस चला जाता है।

हरीश रावत उससे प्रश्न पूछता है कि आनंद की आत्महत्या कर लेने का टेलीफोन किसके द्वारा और क्यों किया गया था, दूसरी बात यह बताओ कि वह डॉक्टर कौन था जिसने आनंद की स्वाभाविक मृत्यु हृदयाघात से होना बताया था। रवि कहता है कवह टेलीफोन मैने

ही हमशक्ल को उपर बैठाकर नीचे आकर किये थे। आनंद यदि जहर वाली चाय पी लेता तो मैं उसकी आत्महत्या का मामला बनाने की कोशिश में था। डॉक्टर जो आया था वह वास्तव में कंपाउंडर था जिसे मैंने इस काम के लिये पच्चीस हजार रू. देकर गांव से बुलाया था।

हरीश रावत ने उसको जोर से थप्पड मारते हुये कहा कि तुमने आनंद के उपर गोली नहीं चलायी बल्कि उस व्यक्ति पर गोली चलायी जिसने तुम पर इतना विश्वास किया। इसके बाद का घटनाक्रम आनंद केे हमशक्ल की अंत्योष्टि से लेकर अभी तक का आपको मालूम ही है।

हरीश रावत अब रवि से पूछता है कि आनंद कहाँ पर है वह कहता है कि मुझे नहीं मालूम कि उसे कहाँ पर रखा गया है और वह जीवित है या नहीं इसकी मुझे कोई जानकारी नहीं है। मैं आनंद की मृत्यु चाहता था मुझे उसकी वसीयत का फायदा तभी मिल सकता था जब आनंद की जीवनलीला समाप्त हो चुकी हो। रिजवी और शमशेर सिंह आनंद की मृत्यु नहीं चाहते थे, वे पाँच दस करोड़ रूपये प्राप्त करके उसे छोड देने में रूचि रखते थे। इस कारण उन दोने में मुझे आनंद के संबंध में कोई भी जानकारी जानबूझ कर नहीं दी हैं।

अब जाँच अधिकारी उससे पूछता है कि तुम एक राष्ट्रीयकृत बैंक में कई बार जाते हुये दिखे हो हमें इस संबंध में पूरी जानकारी है अब तुम ही बता दो कि क्या माजरा है। रवि समझ जाता है कि पुलिस को पूरी खबर है अब झूठ बोलने से कोई फायदा नही। वह स्वीकार कर लेता है कि उसका बैंक खाता एवं लॉकर वहाँ पर है। बैंक का यह खाता रिजवी के सहयोग से खोला गया था और लॉकर में जो वसीयत मैंने बनाई थी उसकी मूल प्रति रखी हुयी है। वह पुलिस के संरक्षण में वहाँ जाकर वह वसीयत हरीश रावत के हाथों में दे देता है।

इस प्रकार पुलिस को रवि के खिलाफ सबसे बडा सबूत प्राप्त हो जाता है।

अब यह जाँच प्रक्रिया और भी अधिक उलझ गया थी एवं इसमें बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता हरीश रावत समझ रहे थे। इसकी महत्वपूर्ण कड़ी शमशेर सिंह और रिजवी को पुलिस खोज रही थी परंतु वे दोनो नदारद थे। पुलिस को यह भी शक था कि कही ये दोने देश के बाहर ना चले गये हो।

राकेश और गौरव को जब यह बात पता हुई तो उन्होने सोचा कि उन्हें भी आनंद के संबंश में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। यदि आनंद जीवित है तो उनके लिये इस अधिक खुशी की बात और क्या हो सकती हैं। पुलिस तो अपना प्रयास कर ही रही है वे इस दिशा में क्या कर सकते हैं यह सोचते हुये वे मानसी के पास पहुँचते हैं मानसी पूरी बात सुनकर कहती है कि पल्लवी को भी सारी बाते ंपता नहीं हे उसने मुझे बताया था कि गोवा में रिजवी प्रतिदिन किसी से फोन पर बात करता था जिसमें आनंद का जिक्र रहता था मेरे बहुत पूछने पर भी उसने मुझे इस संबंध में कुछ भी नहीं बताया वह मुझे बिना बताए ही अचानक गायब हो गया। मानसी उससे पूछती है कि रिजवी के उसके खुद के मकान के अलावा और भी कोई रहने की जगह है क्या? पल्लवी बताती है कि हाँ एक फार्म हाउस है जो कि यहाँ से 25 किलोमीटर की दूरी पर है परंतु वहाँ पर वह बहुत कम ही जाता है राकेश यह जानकारी पुलिस विभाग को देता है हरीश रावत इसे महत्वपूर्ण मानता है और अपने विश्वसनीय पुलिस कर्मचारियों को फार्महाउस पर नजर रखने के लिये नियुक्त कर देता है उसे उसी दिन शाम को ही खबर मिलती है कि शमशेर सिंह और रिजवी को वहाँ देखा गया है वहाँ की गतिविधियाँ संदिग्ध हैं एवं

चारों ओर से नजरबंद जैसा माहौल है यह जानकर हरीश रावत के नेतृत्व में पुलिस दल बल सहित रात में ही वहाँ छापामार कार्यवाही करके रिजवी और शमशेर सिंह को गिरफ्तार करके आनंद के विषय में कडाई से पूछताछ करते है तो वे बता देते हैं कि आनंद उपर के कमरे में सुरक्षित है पुलिस तुरंत ही उपर जाकर आनंद को अपने कब्जे में ले लेती है और तुरंत ही उसे वहाँ से अपने साथ वरिष्ठ अधिकारियों के पास ले जाती है।

यह जानकारी उसके घर पर पहुँचने पर खुशी का माहौल हो जाता है और आनंद से मिलने पहुँच जाते हैं। वहाँ पर शहर के पत्रकारों, गणमान्य नागरिकों एवं कर्मचारियों की भारी भीड एकत्रित हो जाती है जिसे संभालना पुलिस के लिये कठिन हो जाता है पुलिस अधिकारी आनंद से जानना चाहते हैं कि उसका अपहरण क्यों हुआ और कैसे उसने अपनी जान की सुरक्षा की उसे अपहरण के दौरान उसके साथ कैसा व्यवहार हुआ इस पूरे मामले की विस्तृत जानकारी जानने के लिये सभी उत्सुक थे।

आनंद सबसे पहले अपने परिवारजनों एवं अपने अभिन्न मित्रगण राकेश एवं गौरव के साथ अपने पारिवारिक मंदिर में जाकर प्रभु कृपा के लिये प्रभु को प्रणाम करके आकर सभी बातें बताने की इच्छा व्यक्त करता है। पुलिस के संरक्षण में उसे मंदिर ले जाया जाता है। जहाँ वह दर्शन के उपरांत वापिस आ जाता है। अब वह अधिकारियों को विस्तारपूर्वक सभी घटनाओं की जानकारी देता है।

वह कहता है कि उस दिन रात को लगभग नौ बजे गौरव के जाने के बाद वह रवि को बताकर उसके कर्मचारी की बेटी की शादी में जाकर साढे नौ बजे के आसपास वापिस आता है उस दिन घर एकदम सुनसान था केवल एक चौकीदार और रवि ही वहाँ पर थे क्योंकि सभी

कर्मचारीगण शादी में शामिल होने गये हुये थे। वह लिफ्ट से उपर जाकर अपने बेडरूम की ओर बढ़ रहा था उसे महसूस हो रहा था कि कोई बेडरूम के पर्दे के पीछे छिपा हुआ है यह देखकर वह थोडा ठिठका और बेडरूम के सामने के काँच में रवि का प्रतिबिंब दिख रहा था उसके हाथ में रिवाल्वर भी थी मैं कुछ समझ नहीं पाया तभी बेडरूम में घुसते समय ही उसने फायर किया मैं सावधान था और तुरंत दौडकर जीने को ओर भागा मैं तेजी से कूदता हुआ जीना पार कर रहा था तभी दूसरी गोली मेरे पास से निकल गयी मैं लॉन से होता हुआ घर के पिछवाडे की दीवार से दूसरी तरफ कूद गया मैं वहाँ यह देखकर अचंभित हो गया कि वहाँ पर दो गाडियों में छः सात लोग बैठे हुये थे और वे मेरा ही इंतजार कर रहे थे उनमें से एक ने कहा अरे इसे तो बेहोशी की हालत में बाहर लाया जाना था परंतु यह तो होशोहवास में हैं इतना कहकर उन लोगों ने मुझे घेरकर जबरदस्ती एक गाड़ी में बैठा दिया और मुझे चुप रहने की हिदायत दी वे सभी सशस्त्र थे और मैंने चुप रहने में ही भलाई समझी उन्होने फोन से किसी से बात की उसने निर्देश दिया कि इसे बिना मालूम हुये अपने गंतव्य पर पहुँचा दो। उन्होनें मेरी आँख पर पट्टी बांधकर एक स्थान पर ले गये और वहाँ कार से मुझे उतारकर एक सुसज्जित कमरे में बैठाकर मेरी आंखों की पट्टी खोल दी। मै बहुत घबराया हुआ था और मेरी सिट्टी पिट्टी गुम थी मेरी कल्पना के विपरीत उन सभी का व्यवहार बहुत अच्छा था और मुझे उन्होने चाय नाश्ता भोजन आदि सभी सुविधायें प्रदान की थी। मैं कमरे के बाहर नहीं जा सकता था तथा मुझे बाहर की कोई भी जानकारी नहीं दी जाती थी। मुझे वहाँ क्यों लाया गया मेरे से क्या चाहते हैं और कौन उनका बॉस है यह दो दिन तक पता ही नहीं चल पाया था।

इसके बाद तीसरे दिन रिजवी और शमशेर सिंह दोने मेरे पास आये तो मैं आश्चर्यचकित रह गया कि यह काम उनका है उनका व्यवहार भी मेरे साथ बहुत अच्छा रहा मैंने उनसे पूछा कि आप लोग क्या चाहते हैं और मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया जा रहा है रवि ने मुझे खत्म करने का प्रयास क्यों किया ? वे बोले कि हम तुम्हें सबकुछ बताते हैं रवि ने तुम्हारे दस्तखत के स्टेम्प पेपर पर वसीयत बना ली है कि तुम्हारी मृत्यु के उपरांत तुम्हारी सारी संपत्ति उसे मिल जाएगी इसलिये वह तुम्हें जान से मारना चाहता है उन्होने मुझें मेरे हमशक्ल से लेकर उसकी अंत्योष्टि एवं पुलिस की जाँच पड़ताल के विषय में बताया उन्होने यह भी कहा कि रवि ने डबल क्रास किया था हम दोने तुम्हारी जान नहीं लेना चाहते थे। मैं पल्ल्वी के नाम की वसीयत तुम्हारे द्वारा बदले जाने से नाराज था और शमशेर सिंह रंजना के नाम की वसीयत बदले जाने से बहुत खिन्न था यह शमशेर सिंह के दिमाग की योजना थी कि तुम्हारा अपहरण करके वसीयत बदले जाने की बात भूलकर दस दस करोड़ रूपये वसूल कर लिये जाए तो हम लोगों का सारा जीवन आसानी से व्यतीत हो जाएगा इसी बीच रवि ने अपने नाम की वसीयत की जानकारी दी और हम लोगों से तुम्हें खत्म करने का अनुरोध किया इसके लिए उसने जायदाद मिलने पर पाँच पाँच करोड़ रू. देने का आश्वासन दिया।

शमशेर सिंह ने शक जाहिर करते हुये कहा कि जब पूरी जायदाद उसने अपने नाम लिख ली है तो आनंद के नहीं रहने पर यदि इसने अपने को धन नहीं दिया तो हम क्या कर लेंगें। हम दोनें ने तुम्हारी जीवनलीला खत्म करने के लिये स्पष्ट रूप से रवि को मना कर दिया। अब दोनो के उद्देश्य अलग अलग थे हमें तुमसे धन लेना था और रवि को तुम्हारी जान उसने सुझाव दिया था कि तुमको

बेहोश करके पिछले दरवाजे से बाहर ले आयेगा फिर हम लोग तुम्हें अपने निर्धारित स्थान पर रखेंगे इसके बाद क्या करना चाहिये इसे सोचकर अंतिम निर्णय लिया जाएगा। हम लोगों ने इसे स्वीकृति दे दी पंरतु तुम अभी कहाँ पर हो एव ंहम दोने भी यहाँ पर हैं इसकी जानकारी रवि को नहीं होने दी पल्लवी या मानसी को भी इन सभी बातों की कोई जानकारी नहीं है अब हम लोगों की अपेक्षा है कि हमारी मांग पूरी हो जाए और हम तुम्हें रिहा कर दें। हमें रवि से कुछ लेना देना नहीं है।

मैंने उनकी पूरी बात सुनकर कहा कि आप लोग तो मेरे जीवन की रक्षा के कवच बन गये हैं इसके लिये मैं आपको दस करोड़ से ज्यादा भी दे सकता हूँ पंरतु एक बात आप सोच लीजिये इतनी बडी रकम आप कहाँ रखेंगे और इसका उपयोग कैसे कर पायेंगे क्योंकि जैसे ही आप अपनी हैसियत के उपर कोई भी कार्यकलाप करेंगे वह सबकी नजर में आने लगेगा इसके साथ साथ रवि भी आपसे अपना बदला लेगा। मैं आपको अपने व्यापार में भागीदारी दे सकता हूँ जिससे आजीवन आपको धन प्राप्त होता रहेगा और किसी के कुछ समझ में नहीं आयेगा। रवि को हमसब मिलकर पुलिस के हवाले करवा देगे और जेल में सडता रहेगा। आप विचान लें आप क्या चाहते हैं ? मैं मन में समझ गया था कि इनको मैं रेज धन कमाने का एक नया फार्मूला देता जाउँगा ये अनिश्चय की स्थिति में रहेंगे, समय निकलता जायेगा और पुलिस कार्यवाही में ये सभी पकड़े जायेंगे और मेरी यह सोच एकदम सही निकली आखिर आप लोगों ने मुझे मुक्त करा ही लिया। ये लोग इतनी बड़ी रकम के लालच में इतने उलझे हुये थे कि इन्हें क्या करना चाहिये यह इनकी समझ के बाहर था

और ये लोग रवि कि गिरफ्तारी की आशा में समय व्यतीत कर रहे थे।

पुलिस विभाग द्वारा अभी तक रवि को गिरफ्तार ना करने के कारण ये दोनो बहुत व्यथित थे। शमशेर सिंह ने विचार करके सोच समझ कर हमशक्ल की पत्नी को फोन किया कि आपके पति कहाँ पर हैं, किस हालत में हैं ? इसका पता करने के लिये तुरंत ही आ जाइये यह फोन आते ही वह तुरंत आनंद के गृहनगर पहुँच कर पुलिस थाने जाती है और अपने पति की फोटो दिखाकर उसके विषय में जानकारी प्राप्त करने का अनुरोध करती है।

रवि की गिरफ्तारी से शमशेर सिंह और रिजवी खुश हो जाते है और मुझे बधाई देते हुये कहते हैं कि अब तुम्हें रिहा करने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। अभी हम लोग यह बात कर ही रहे थे कि आपने छापा मार कर मुझे रिहा करा लिया। जाँच अधिकारी हरीश रावत आनंद को कहता है मैं कभी किसी के निजी मामलों के विषय में दखलंदाजी नहीं करता हूँ परंतु पल्लवी और रंजना का आपसे संबंध अब निजी ना होकर हत्या और अपहरण से जुडा हुआ हैं। इस संबंध में मुझे आपसे विस्तारपूर्वक जानकारी की अपेक्षा है। मुझे आशा है कि आप बिना कुछ भी छिपाए हुये हमें इससे अवगत करायेंगे।

आनंद इनसे अपने संबंधों को स्वीकार कर लेता है और बताता है कि रंजना शमशेर सिंह की सगी बेटी नहीं हैं। यह किसी धनाढ्य व्यक्ति की नाजायज संतान हैं जिसे पालन पोषण के लिये शमशेर सिंह को उसके जन्म के साथ ही दे दिया गया था। रंजना के नाम पर ही सभी सेव के बगीचे, धन दौलत एवं अन्य जायदाद है जिससे काफी आमदनी आती है। रंजना एक खुले विचारों वाली स्वछंद लडकी है जिसके मित्रता कई पुरूषों से रही है। वह बहुत ही सुंदर एवं चतुर

लडकी है। अब शमशेर सिंह का उस पर कोई नियंत्रण नहीं है। रंजना से आनंद ने शादी के लिये इंकार करने के बाद गौरव की नसीहत पर मसूरी आना बंद कर दिया था और मैंने रवि को यहाँ बुला लिया था। पल्लवी के साथ मेरी मित्रता रंजना से दोस्ती समाप्त होने के बाद हुई थी यह कैस कब कहाँ क्यों ? इन सभी प्रश्नों का उत्तर आपको गौरव और राकेश ने दे दिये हैं उन्हें वापिस दोहराने में कोई लाभ नहीं है इसमें मेरी ही गलती थी कि मैंने पल्लवी के निजी जीवन के विषय में उसके बताने की मंशा के बावजूद भी यह कहकर उसे बताने नहीं दिया कि मैं अतीत में विश्वास नहीं रखता वर्तमान में जीता हूँ, भविष्य की कल्पना करता हूँ। मैंने राकेश के समझाने पर भी कि पल्लवी का साथ छोड दो उसकी बात ना मानकर उसी से अपनी दूरी बढ़ा ली थी। गौरव ने भी मुझे समझाया था कि वसीयत का प्रलोभन तुम्हारे लिये कभी भी जान का खतरा बन सकता है। मुझे अपने मित्रों की बातों पर विश्वास रखना चाहिये था परंतु कभी कभी हम अपने हितेषियों को भूल जाते हैं।

मेरी पूरी शिक्षा दीक्षा विदेश में हुई है इसलिये मेरे मन की भावनायें इस प्रकार के संबंधों को बुरा नहीं मानती क्योंकि वहाँ पर यह सब एक सामान्य बात है परंतु अपने देश की सभ्यता, संस्कृति व संस्कार अलग हैं जो इसे मान्यता नहीं देते हैं। अब मुझे वास्तविक धरातल का अनुभव हो रहा है कि मेरी गलतियों के कारण ही आज का ये दुखद दिन आया है मैं कानून से तो रिहा हो गया हूँ परंतु अपने गलत कर्मों के फलों कैसे रिहा हो सकूँगा यह नहीं समझ पा रहा हूँ यह मेरे निजी जीवन के बारे में सच्चाई जानने के बाद मुझे इस बात की चिंता नहीं हैं कि बाहर वाले मेरे विषय में क्या सोचते हैं

परंतु मुझे चिंता इस बात की है कि मेरे घर में ही अब मेरी स्थिति क्या रहेगी।

मैंने एक महिला पल्लवी की आर्थिक मदद करके उसे स्वावलंबी बनाकर सम्मान से जीने का रास्ता दिखाया। इसकी तारीफ कोई नहीं करेगा। मेरे निजी संबंधों को आलोचना का विषय बना दिया जाएगा। आनंद अब उस हमशक्ल के परिवार से मिलता है और उन्हें सांत्वना देता है उसके बेटे के अच्छी पढाई की जवाबदारी अपने कंधे पर लेकर उसके परिवार को बाकी खर्च हेतु आजीवन मदद का आश्वासन देता है। उसकी पत्नी रोती हुयी उसकी इस कृपा के लिये धन्यवाद देती है।

अब जाँच अधिकारी शमशेर सिंह और रिजवी से पूछताछ करता है जो उनको वही जानकारी देते हैं जो आनंद और रवि बता चुके थे। अब आनंद को उसके घर जाने दिया जाता है रवि, रिजवी और शमशेर सिंह को हिरासत में ले लिया जाता है। पल्लवी और रंजना का इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं था इसलिये उन्हें पूछताछ के बाद छोड दिया जाता है। आनंद अनुरोध करता है कि रिजवी और शमशेर सिंह को वो माफ कर रहा है इसलिये उन्हें छोड दिया जाए इस पर पुलिस अधिकारी कहते हैं कि यह मामला हमारे हाथ में नहीं हैं यह न्यायिक प्रक्रिया है न्यायालय जैसा उचित समझेगी वैसा होगा। आप अपनी ओर से यह अपील न्यायालय से कर सकते हैं।

आनंद अपने परिवार के सदस्यों और मित्रों के साथ घर चला जाता है। नगर के सभी समाचार पत्रों में दूसरे दिन बहुत विस्तार से इस संबंध में जानकारी प्रकाशित होती है। आनंद के व्यक्तिगत संबंध अपनी पत्नी से और भी अधिक खराब हो जाते है और वो दूसरे दिन ही अपने माता पिता के पास बैंकाक चली जाती है उसके दोने लडके भी अपनी माँ का साथ देकर पिता के विचारों से असहमति रखते हुये

वापस दुबई चले जाते हैं। गौरव अपने बेटे के पास अमेरिका चला जाता है। राकेश भी आनंद का हश्र देखकर मानसी तक ही अपने संबंध सीमित कर देता है।

आनंद महसूस करता है कि उसे नवजीवन प्राप्त हुआ है। उसके मन पर इन घटनाओं का गहरा असर पड़ा था और जिससे उसके जीवन में परिवर्तन हो गया था। अब वह अपना समय अपने उद्योग एवं व्यापार की उन्नति के साथ साथ सामाजिक कार्यों एवं प्रभु स्मरण में समर्पित करने लगा था। उसकी विचारधारा में इस परिवर्तन के कारण उसके, उसकी पत्नी और बेटों के साथ संबंध मधुर होने लगते हैं। वह सादा जीवन, उच्च विचार के सिद्धांत को अपनाकर जीवन जीने लगता हैं जिससे उसके जीवन में वास्तविक आनंद की प्राप्ति होने लगती है।

जीवन में गरीबी
पैदा करती है अभाव
पनपाती है अपराध
और होता है समाज का अपराधीकरण।
जीवन में अमीरी
पैदा करती है दुर्व्यसन
लिप्त करती है समाज को
जुआ, सट्टा, व्याभिचार और शराब में।
इसलिये हमारे ग्रंथ कहते हैं
धन हो इतना
कि पूरी हों हमारी आवश्यकताएं।
कभी ना हो

धन का दुरूपयोग।
जीवन हो
परोपकार और जनसेवा से परिपूर्ण।
पाप और पुण्य की तराज़ू में
पाप कम और पुण्य ज्यादा हों
तन में पवित्रता और
मन में मधुरता हो।
हृदय में प्रभु की भक्ति और
दर्शन की चाह हो।
धर्म-कर्म करते हुए ही
पूरी हो जीवन लीला
हमारे जाने के बाद
लोगों के दिलों में
बनी रहे हमारी मधुर याद।